SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 25 • ISSUE 03 • MAY 2026

हिन्दी मासिक

मई 2026

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

वास्तविक क़ुरबानी दिल की चाहत की क़ुरबानी

ईदुल अज़हा के अवसर पर मुसलमान एक बड़े वाक़िए को याद करते हैं, ये बड़ा वाक़िया अल्लाह के सर्वश्रेष्ठ नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से सम्बंधित है जिन्होंने अपने बेटे को अल्लाह की राह में क़ुरबान किया, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अपने दिल की मुहब्बत व चाहत की क़ुरबानी का ये अमल न सिर्फ ये कि अल्लाह के यहां मक़बूल हुआ बल्कि इतना पसन्द आया कि आने वाली नस्लों में उसकी याद और नक़ल को क़यामत तक के लिए यादगार बना दिया।

(हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी रह.)

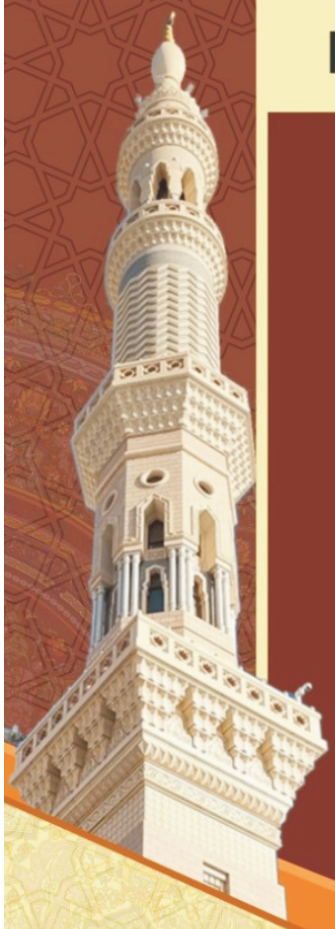

एक प्रति ₹40/=

वार्षिक ₹400/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
समयः (8:00 am to 1:00 pm)
Whats'app & Call:
Mob. 9559844716
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक)	60 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

मई 2026 वर्ष 25 अंक 03

मदीने को जाएं यह जी चाहता है

मदीने को जाएं यह जी चाहता है ।
मुकद्दर बनाएं यह जी चाहता है।।
मदीने के आका दो आलम के मौला।
तेरे पास आएं यह जी चाहता है।।
मुहम्मद (सल्ल0) की बातें मुहम्मद की सीरत।
सुनें और सुनाएं यह जी चाहता है।।
दरे पाक के सामने दिल को थामे।
करें हम दुआएं यह जी चाहता है।।
दिलों से जो निकलें दयारे नबी में।
सुनें वह सदाएं यह जी चाहता है।।
पहुंच जाएं बहज़ाद जब हम मदीने।
तो खुद को न पाएं यह जी चाहता है।।

(बहज़ाद लखनवी)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
इस्लाम की महत्वपूर्ण इबादत हज	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	13
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	15
दुनिया का पहला मानवाधिकार चार्टर	इदारा	17
तालीम के साथ तरबियत	इं0 जावेद इक़बाल	18
कुरबानी यानी सब कुछ ख़ुदा के लिए	सैय्यद सुफयान अहमद नदवी लखनवी	21
हज का एक अहम काम	मौलाना मुहम्मद जैनुल हक़ नदवी	23
माँ–बाप और बुज़ुर्गों के साथ व्यवहार	अनवर हुसैन	25
कुरबानी का महत्व	मुहम्मद इक़बाल नदवी	26
बदलता लखनऊ	शारिक़ अलवी	28
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	30
हज और हमारा समाज	नौशाद खान नदवी	32
कुरबानी के मसायल	इदारा	34
मदीना मुनव्वरा का सफ़र	इदारा	36
कारख़ाने का चक्कर	मायल ख़ैराबादी	37
स्वास्थ्य	लोकेश के0 भारती	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-बनी इस्राईलः-

अनुवादः—

या सोने का आपका कोई घर हो या आप आसमान पर चढ़ जाएं और हम तो आपके चढ़ जाने को भी उस समय तक न मानेंगे जब तक आप कोई ऐसी किताब लेकर न उतरें जिसको हम पढ़ सकें, कह दीजिए मेरा पालनहार पाक है, मैं क्या हूँ एक इन्सान हूँ जिसे पैगम्बर बनाया गया है[1](93) और लोगों के पास हिदायत आने के बाद मान लेने से केवल यही चीज रुकावट बनती है कि वे कहते हैं कि क्या अल्लाह ने इन्सान को पैगम्बर बना दिया(94) कह दीजिए कि अगर ज़मीन में फरिश्ते होते जो आराम से चल फिर रहे होते तो ज़रूर हम उन पर आसमान से फरिश्ते को पैगम्बर बना कर उतार देते(95) कह दीजिए कि अल्लाह ही हमारे तुम्हारे बीच गवाह काफी है, बेशक वह अपने बंदों की खूब ख़बर रखता है, अच्छी तरह निगाह रखता है(96) जिसको अल्लाह हिदायत प्रदान कर दे वही हिदायत पर है और जिसे वह गुमराह कर दे तो आप अल्लाह के अलावा उसके लिए कोई मददगार न पाएंगे और उनको हम कयामत के दिन उनके चेहरों के बल अंधा, गूंगा और बहरा करके उठाएंगे, उनका ठिकाना दोजख होगा, जब जब वह धीमी पड़ने लगेगी हम उन पर उसको और भड़का देंगे(97) यह उनकी सजा इसलिए है कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और कहा कि जब हम हड्डी चूरा हो जाएंगे तो क्या हमें नये सिरे से उठाया जाएगा(98) क्या उनको दिखाई नहीं देता कि वह अल्लाह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वह इस पर कुदरत (सामर्थ) रखता है कि उन जैसा पैदा कर दे और उसने उनके लिए एक निर्धारित अवधि रख दी है जिसमें जरा संदेह नहीं फिर भी अन्यायकारी लोग इनकार ही किये जाते हैं[2](99) कह दीजिए अगर तुम मेरे पालनहार की रहमत (दया) के खजानों के मालिक होते तो खर्च के डर से रोके ही रखते और इंसान तो है ही बहुत संकीर्ण हृदय (तंग दिल) वाला[3](100) और हमने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दी थी[4] बस बनी इस्राईल से पूछ लीजिए जब वे उनमें आये थे तो उनसे फिरऔन ने कहा कि ऐ मूसा! हमें तो यही लगता है कि तुम पर जादू चल गया है(101) कहा कि तुम तो जानते हो कि इन चीजों को किसी और ने नहीं आसमानों और ज़मीन के पालनहार ने समझाने के लिए उतारा है और ऐ फिरऔन! मैं तो समझता हूँ कि तू विनष्ट (हलाक) होकर रहेगा(102) बस उसने चाहा कि देश में उनके कदम उखाड़ दे तो हमने उसको और उसके साथ वालों को (सबको) डुबो दिया(103) और उसके बाद हमने बनी इस्राईल से कह दिया कि तुम देश में रहो फिर जब आख़िरी वादा आ पहुँचेगा तो हम तुम सबको समेट कर ले आएंगे(104) और ठीक—ठीक उसे हमने उतारा और ठीक—ठीक ही वह उतरा भी है और आपको तो हमने शुभ समाचार देने वला और ख़बरदार करने वाला बना कर भेजा है[5](105) और हमने कुरआन के टुकड़े टुकड़े (भाग) रखे हैं ताकि आप लोगों को ठहर ठहर कर सुना दें और हमने उसको थोड़ा थोड़ा करके उतारा है[6](106) कह दीजिए तुम इसको मानो या न मानो जब यह उन

लोगों को पढ़ कर सुनाया जाता है जिनको पहले से ज्ञान दिया गया है तो वे ठोढ़ियों के बल सज्दे में गिर जाते हैं(107) और कहते हैं कि हमारा पालनहार पाक है, निश्चित ही हमारे पालनहार का वादा पूरा होना ही है(108) और वे रोते हुए ठोढ़ियों के बल गिर जाते हैं और यह चीज़ उनकी विनम्रता (खुशूअ़) को और बढ़ा देती है[7](109) कह दीजिए तुम (उसको) अल्लाह या रहमान कहो, जो कह कर उसको पुकारो उसके सब ही नाम अच्छे हैं, और आप अपनी नमाज़ में आवाज़ न अधिक ऊँची करें और न अधिक नीची और बीच का तरीका अपनाएँ[8](110) और कह दीजिए असल प्रशंसा तो अल्लाह के लिए है जिसने न किसी को बेटा बनाया और न बादशाही में कोई उसका साझी है और न कमज़ोरी के कारण कोई उसका सहायक है और आप उसकी बड़ाई ही बयान करते रहें(111)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. मक्के के मुश्रिक विभिन्न प्रकार की मांगे किया करते रहते थे, अंत में इसका आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से जवाब दिया जा रहा है कि "मैं कोई खुदा नहीं हूँ कि सब काम मेरे अधिकार में हों, मैं तो एक इंसान हूँ जिसको पैगम्बर बनाया गया, अल्लाह ने जो मोअजिजे (ईश चमत्कार) मुझे प्रदान किए उनसे अधिक मैं अपने अधिकार से कुछ नहीं कर सकता" फिर आगे आयत में कहा कि आमतौर से यही चीज सत्य मार्ग अपनाने में रुकावट बनती है कि अल्लाह ने इंसान को पैगम्बर बना दिया, इसके आगे इसका उत्तर है कि इंसान का मार्ग दर्शन इंसान ही कर सकता है, हाँ! अगर दुनिया में फरिश्तों की आबादी होती तो ज़रूर फरिश्तों को रसूल बना कर उतार दिया जाता।

2. जिसने इतने बड़े–बड़े आसमान और ज़मीन, पहाड़ व समुद्र पैदा कर दिये उसके लिए छोटी सृष्टि का पैदा करना क्या मुश्किल है "आसमानों और जमीन का पैदा करना इंसानों के पैदा करने से बड़ी चीज़ हैं"।

3. रहमत (दया) के ख़ज़ानों का मतलब यहाँ वे तमाम रहमत के ख़ज़ाने हैं जिनके द्वारा बंदों पर अल्लाह की रहमत (दया) होती है चाहे भौतिक हो या अभौतिक, विशेष रूप से पैगम्बरी की ओर इशारा है कि अगर तुम्हें अधिकार होता तो तुम कहाँ गवारा कर सकते थे कि मक्के व तायफ के बड़े मालदारों को छोड़ कर वह्य और पैगम्बरी का यह अमूल्य धन हाशिम की संतान के एक अनाथ को मिल जाए और अगर यह धन तुम्हारे पास ही रहता तो जिस प्रकार तुम मालों में कंजूसी करते हो उसी प्रकार इसके प्रचार–प्रसार में भी कंजूसी करते।

4. वे नौ निशानियाँ ये थीं, अ़सा (छड़ी), सफेद चमकदार हाथ अकाल वाले वर्ष, फलों की कम पैदावार, तूफान, टिड्डी, खटमल, मेंढक, खून। सूरः अअ़राफ में इसका विवरण गुज़र चुका है।

5. यह कुछ उन मुश्रिकों के संदेहों का उत्तर है जो कहा करते थे कि कुरआन की आयतों में रास्ते ही में परिवर्तन हो जाता है।

6. तत्वदर्शिता व आवश्यकता के अनुसार थोड़ा– थोड़ा उतरा फिर आयतों और सूरतों को अलग अलग रखा ताकि पाठ और याद करना भी सरल हो।

7. इससे आशय वे लोग हैं जिनको तौरेत व इंजील का सही ज्ञान था और स्वभाव में न्याय था, जब उन्होंने कुरआन सुना तो कह उठे यही वह अंतिम वाणी (कलाम) है जिसका वादा किया गया था, जो अंतिम पैगम्बर पर उतर रहा है और वे सज्दों में गिर जाते हैं और इससे उनकी खुशूअ़ (विनम्रता) में और बढ़ोतरी होती है।

शेष पृष्ठ ....12...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

बन्दे की सोच और गुमान के मुताबिक अल्लाह का फैसलाः-

खुशनसीब और भाग्यशाली मालदारः—

हजरत अबू हरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि मुहताज मुहाजिरीन अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास आए और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0! मालदार लोग बुलन्द दर्जे और हमेशा बाकी रहने वाली निअ़मतों (दौलतों) में हमसे आगे बढ़ गए हैं, नमाज़ हम भी पढ़ते हैं और नमाज़ वो भी पढ़ते हैं, और रोज़े में भी वो हमारे बराबर हैं लेकिन उनको यह बड़ाई हासिल है कि वो अपने माल की वजह से हज करते हैं, उमरः करते हैं, जिहाद करते हैं और सदका (दान) करते हैं। आप सल्ल0 ने फरमाया— मैं तुमको ऐसी चीज़ न बता दूँ जिसको लेकर तुम पहलों के बराबर हो जाओ और पिछलों से भी आगे बढ़ जाओ और तुम से बेहतर कोई भी न होगा जब तक कि वही अमल न कर लेगा, कहाः अल्लाह के रसूल! ज़रूर कहिये, आप सल्ल0 ने फरमाया— हर नमाज़ के बाद 33—33 बार तस्बीह (सुब्हानल्लाह), तहमीद (अलहमदुलिल्लाह) और तकबीर (अल्लाहु अकबर) कह लिया करो। (बुखारी

सोने से पहले अल्लाह का जिक्र (गुणगान):—

हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ने उनसे और और हजरत फातिमा रज़ि0 से फरमायाः जब तुम दोनों अपने बिछौने पर जाया करो तो 33 बार ''अल्लाहु अकबर'' कह लिया करो। एक हदीस में है कि सुब्हानल्लाह 34 बार और एक में है कि अल्लाहु अकबर 34 बार। (बुखारी व मुस्लिम)

दुआ इबादत हैः—

हजरत नुअ़मान बिन बशीर रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः— ''दुआ इबादत है''। (तिर्मिजी)

हज़रत सलमान फारसी रज़ि0 से रिवायत (वर्णित) है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः— किस्मत (आने वाली मुसीबतों और आजमाइशों) के फैसले को दुआ ही बदल सकती है, और नेकी (पुण्य/भलाई) उम्र में वृद्धि करती है। (तिर्मिजी)

दूसरों के लिए दुआ अपने लिए दुआ हैः—

हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 से रिवायत है, उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना है कि जो मुसलमान बन्दा अपने मुसलमान भाई के पीठ पीछे उसके लिए दुआ करता है तो फरिश्ता कहता है कि तुझको भी वही भलाई मिले जो तू उसके लिए मांग रहा है। (मुस्लिम)

दुआ ज़रूर कुबूल होती हैः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— तुम्हारी दुआएं ज़रूर कुबूल होती हैं अगर जल्दी न करो, और यह न कहो कि मैंने दुआ की और कुबूल न हुई। (बुखरी, मुस्लिम)

बन्दा जल्दबाजी और निराशा के कारण दुआ की कुबूलियत का हक खो देता है, इसलिए चाहिए कि हमेशा मांगता रहे और यह यकीन करे कि एक न एक दिन उसकी दुआ ज़रूर कुबूल होगी वरना आख़िरत में दुआ करने का सवाब तो मिलेगा ही।

❖❖❖

इस्लाम की महत्वपूर्ण इबादत हज

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

संसार के स्वामी और सृष्टा अल्लाह ने फरमाया कि ''मैंने इन्सानों और जिन्नातों को तो मात्र इसीलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें, मैं उनसे रोज़ी नहीं चाहता और न ये चाहता हूं कि वे मुझे खिलाएं''। (सूरः ज़ारियात, आयतः 56,57)

नमाज़ एक इबादत है, रोज़ा एक इबादत है, ज़कात एक इबादत है, हज एक इबादत है, ये सब इस्लाम की अनिवार्य इबादतें हैं यदि कोई मुस्लिम और मोमिन इन इबादतों की अनिवार्यता को स्वीकार न करे तो वह इस्लाम धर्म से बाहर निकल जाएगा और वह मुसलमान न कहलाएगा, ईमान लाने के बाद ये इबादतें, इन्सान पर फ़र्ज हो जाती हैं कुरआन और हदीस में इन इबादतों के संबन्ध में स्पष्ट आदेश हैं, नमाज़ और रोज़ा शारीरिक इबादत है, ज़कात आर्थिक इबादत है और ''हज'' शारीरिक और आर्थिक दोनों प्रकार की इबादत है हज ऐसी इबादत है जिसका करना जीवन में एक ही बार फर्ज़ है, इस इबादत की जगह निश्चित है, दुनिया के किसी भी देश का मुसलमान हो उसको हज करने के लिए सऊदी अरब के पवित्र नगर मक्का मुअज़्ज़मा निश्चित तारीखों में पहुंचना होगा, इस्लामी इबादात का ये आख़िरी रुक्न इस्लामी साल के आख़िरी महीने ज़िलहिज्जा में अदा किया जाता है, हज के फ़र्ज़ होने का आदेश अल्लाह ने दिया हैः—

अनुवादः—''और अल्लाह के वास्ते बैतुल्लाह का हज करना फर्ज़ है उन लोगों पर जो वहां तक पहुंचने की इस्तिताअत (सामर्थ्य) रखते हों और जो न मानें तो अल्लाह बे परवाह है सब दुनिया से''

(सूरः आले इमरान आयत नं0 97)

इस आयत में हज के फ़र्ज़ होने का ऐलान भी किया गया है और साथ ही ये भी बताया गया है कि हज सिर्फ़ उन लोगों पर फ़र्ज़ है जो वहां वहुंचने की इस्तिताअत रखते हों और आयत के आख़िरी हिस्से में इस तरफ़ भी इशारा है कि जिन लोगों को अल्लाह ने हज करने की ताक़त और हैसियत दी हो और वह नाशुक्री से हज न करें (जैसे आजकल बहुत से मालदार नहीं करते) तो अल्लाह तआला सबसे बे नियाज़ और बे परवाह हैं, इसलिए उनके हज न करने से उसका तो कुछ नहीं बिगड़ेगा बल्कि इस नाशुक्री और इस नेमत को ठुकरा देने के कारण वे खुद ही उसकी रहमत और दया से महरूम हो जाएंगे और उनका अनजाम (ख़ुदा न करे) बहुत बुरा होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस में है किः— ''जिस किसी को अल्लाह ने इतना दिया हो कि वह हज कर सके लेकिन फिर भी वह हज न करे तो कोई परवाह नहीं है कि चाहे वह यहूदी हो कर मरे या नसरानी (ईसाई) होकर''।

अगर हमारे दिलों में ईमान और इस्लाम की कुछ भी क़दर व क़ीमत सम्मान और महत्व हो और अल्लाह व रसूल से कुछ भी संबन्ध हो तो इस हदीस के सुनने के बाद हम में से किसी ऐसे इन्सान को महरूम न रहना चाहिए जो वहां पहुंच सकता हो।

बहुत सी हदीसों में हज की और हज करने वाले की बहुत सी फ़ज़ीलतें (श्रेष्ठताएं) बयान की गई हैं। कुछ हदीसें यहां लिखी जा रही हैं, एक हदीस में है कि ''हज और उमरे के लिए जाने वाले लोग अल्लाह तआला के ख़ास मेहमान हैं। वह

अल्लाह से दुआ करें तो अल्लाह तआला उनकी दुआ कुबूल करता है और मआफ़ी मांगे तो वह उनको मुआफ़ कर देता है''। (मिश्कात शरीफ़)

एक दूसरी हदीस में है किः– ''जो व्यक्ति हज करे और उसमें कोई बेहूदा और गुनाह की बात न करे और अल्लाह की नाफ़रमानी न करे तो गुनाहों से ऐसा पाक और साफ़ होकर लौटेगा जैसा कि वह अपने जन्म के समय बिल्कुल बेगुनाह था।''

एक और हदीस में है किः– ''हज्जे मबरूर (अर्थात वह हज जो ख़ुलूस के साथ और बिल्कुल ठीक–ठीक अदा किया गया हो और उसमें कोई बुराई और ख़राबी न हुई हो तो उस) का बदला सिर्फ़ जन्नत ही जन्नत है''।

(मिश्कात शरीफ़)

हज की नक़द लज़्ज़तेंः–

हज की बरकत से गुनाहों की माफ़ी और जन्नत की नेमतें जो मिलती हैं वह तो इनशा अल्लाह आख़िरत में मिलेंगी लेकिन अल्लाह तआला के घर काबे शरीफ़ को देख कर और मक्के की उन ख़ास जगहों पर पहुंच कर जहां हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहिमिस्सलाम की और हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यादगारें जब तक मौजूद हैं ईमान वालों को जो लज़्ज़त और दौलत हासिल होती हैं वह भी तो, दुनिया में जन्नत की नेमत है। फिर मदीन–ए–तय्यिबा में रौज़–ए–पाक (कब्र मुबारक) की ज़ियारत और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद शरीफ़ में नमाज़ें पढ़ना और सीधे हुज़ूर ही से मुख़ातिब होकर सलात व सलाम भेजना, मदीने की गलियों में और वहां के जंगलों में चलना फिरना, वहां की हवा में सांस लेना और वहां की मुक़द्दस ज़मीन में और हवा में बसी हुई ख़ुशबू से दिमाग़ का सुगंधित होना और हुज़ूर को याद करके शौक़ और मुहब्बत में ख़ुश होना, कभी हंसना और कभी रो पड़ना ये वह लज़्ज़तें हैं जो हज करने वालों को मक्के और मदीने पहुंच कर नक़द प्राप्त होती हैं। शर्त ये है कि अल्लाह इस क़ाबिल बना दे कि इन लज़्ज़तों को बन्दा समझ सके और इनसे मज़ा ले सके। आओ हम सब दुआ करें कि अल्लाह तआला अपने फज़लो करम से ये दौलत और लज़्ज़तें हमको नसीब करे।

इस्लाम की महत्वपूर्ण इबादत ''हज'' का ऐलान अल्लाह तआला ने हज़ारों साल पहले, सबसे बड़े एकेश्वर वादी नबी और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मूरिसे आला (मूल पुरुष) हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम द्वारा कराया:–

अनुवादः ''और लोगों में हज के लिए ऐलान कर दो, वे पैदल भी आएंगे और ऐसी दुबली पतली ऊँटनियों पर भी आएंगे जो हर सुदूर रास्तों से चली आती होंगी''

(सूरः हज, आयत नं0 27)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह की ओर से आदेश दिया गया कि लोगों में ऐलान कर दीजिए कि इस ''बैतुल्लाह'' अल्लाह के घर का हज तुम पर फ़र्ज़ कर दिया गया, हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि0 की रवायत है कि जब हज़रत इब्राहीम अलै0 को हज की फ़र्जियत के ऐलान का हुक्म हुआ तो उन्होंने अल्लाह से अर्ज़ किया कि (यहां तो सिर्फ जंगल और मैदान है कोई सुनने वाला नहीं) जहां आबादी है वहां मेरी आवाज़ कैसे पहुंचेगी, अल्लाह तआला ने फरमाया कि आपकी ज़िम्मेदारी सिर्फ़ ऐलान करने की है, उसको सारी दुनिया में पहुंचाने और फैलाने की ज़िम्मेदारी हम पर है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मुक़ामे इब्राहीम पर खड़े होकर ये ऐलान किया जिसको अल्लाह तआला ने बहुत ऊँचा कर दिया, बाज़ रिवायतों में है कि आपने जबले अबी कुबैस पर चढ़ कर ये ऐलान किया, कानों में

उंगलियां रख कर दाहिने और बाएं, पूरब और पश्चिम हर ओर ये आवाज़ दी कि ऐ लोगो तुम्हारे रब ने अपना घर बनाया है और तुम पर इस घर का हज फ़र्ज़ किया है तो तुम सब अपने रब के आदेश का पालन करो।

इस रिवायत में ये भी है कि हज़रत इब्राहीम अलै0 की ये आवाज़ अल्लाह तआला ने सारी दुनिया में पहुंचा दी, और सिर्फ़ उस समय के ज़िन्दा इन्सानों तक ही नहीं बल्कि जो इन्सान भविष्य में क़यामत तक पैदा होने वाले थे मोजिज़े के तौर पर उन सब तक ये आवाज़ पहुंचा दी गई और जिस जिस की क़िस्मत में अल्लाह तआला ने हज करना लिख दिया है उनमें से हर एक ने उस आवाज़ के जवाब में ''लब्बैक अल्लाह हुम्मा लब्बैक'' कहा यानी हाज़िर होने का इक़रार किया, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 ने फ़रमाया कि हज के ''तलबिया'' ''लब्बैक'' की वास्तविक बुन्याद यही इब्राहीमी ऐलान का जवाब है।

आज की उन्नतिशील दुनिया में दिखावा और नुमाईश का प्रदर्शन बहुत ज़्यादा होता है आप अपने को इससे सुरक्षित रखिये, वरना सारी मेहनतों पर पानी फिर जाएगा, सबसे पहले अपनी नियत को दुरुस्त की जिए फ़रीज़–ए–हज की अदाएगी केवल अल्लाह की रज़ा और प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए हो, उसके आदेशों का पालन करना हमारा उद्देश्य हो, यह काम अपनी शोहरत और दिखावे के लिए न हो। रवानगी से पहले अपने सारे छोटे बड़े गुनाहों से सच्चे दिल से तौबा व इस्तिग़फ़ार कीजिए ताकि गुनाहों से साफ़ सुथरे हो कर आप अपने मालिक व मौला के दरबार में पहुचें। अल्लाह के जिन बन्दों के हुक़ूक आपके ज़िम्मे हों जिनका कभी आपने हक़ मारा हो, जिन को सताया हो जिनका कभी दिल दुखाया हो उन सब से मुआमला साफ़ कीजिए, माफ़ कराइए या बदला दीजिए, अगर किसी की अमानत आपके पास हो तो अदा कीजिए जिन चीज़ों के बारे में वसीयत करनी हो उनके बारे में वसीयत लिख दीजिए। सफ़रे हज पर रवानगी का दिन आने से पहले ही तमाम इंतिजामात और तैयारियों से फ़ारिग़ हो जाइए ताकि रवानगी पूरे इतमिनान से हो सके। हज के सिलसिले में छोटी बड़ी बहुत सी किताबें लिखी गई हैं जो सरलता पूर्वक हर जगह मिल जाती हैं। इसके अलावा हाजियों की तरबियत और ट्रेनिंग के लिए बराबर प्रोग्राम होते हैं उन प्रोग्रामों से हाजी साहिबान पूरा फाइदा उठाएं, हाजी साहिबान हज सीख कर और पढ़कर जाएं, हज ऐसी इबादत है जो ज़िन्दगी में एक ही बार अदा की जाती है, ऐसा न हो कि हज अधूरा और नाक़िस हो, जिसकी भरपाई संभव नहीं, हाजी अपने को अनावश्यक कामों से बचाएं, हज के फ़राएज़, वाजिबात, सुन्नतों पर ध्यान दें, हज की तारीख़ें 8 ज़िलहिज्जा से 12 जिलहिज्जा तक पाँच दिन हैं, इन पाँच दिनों का चार्ट निम्नलिखित है, उसके मुताबिक़ काम कीजिए आसानी होगी।

हज का पहला दिन 8 ज़िलहिज्जाः–

मक्का से मिना जाना है, ज़ुहर पढ़नी है, असर पढ़नी है, मगरिब पढ़नी है, इशा पढ़नी है। रात मिना ही में गुज़ारनी है।

हज का दूसरा दिन 9 ज़िलहिज्जाः–

फज्र मिना में पढ़ कर अरफ़ात जाना है। ज़वाल के बाद वक़ूफ़ करना है, ज़ोहर और असर अरफ़ात में पढ़ना, गुरूब के बाद मुज़दलफ़ा जाना है इशा के वक़्त पहले मग़रिब फिर इशा पढ़ना, रात मुज़दलफ़ा में रुकना है।

हज का तीसरा दिन 10 ज़िलहिज्जाः–

फज्र के बाद मिना जाना, बड़े शौतान की रमी, तलबिया बन्द कर देना, कुर्बानी करना, हलक़ करना और एहराम उतार देना, मक्का जा कर तवाफ़

ज़ियारत करना।

हज का चौथा दिन 11 ज़िलहिज्जाः–

ज़वाल के बाद छोटे शैतान की रमी, दर्मियानी शैतान की रमी, बड़े शैतान की रमी, तवाफ़ ज़ियारत कल न किया हो आज करलें।

हज का पाँवां दिन 12 ज़िलहिज्जाः–

ज़वाल के बाद छोटे शैतान की रमी, दरमियानी शैतान की रमी, बड़े शैतान की रमी, तवाफ़ ज़ियारत अगर कल न किया हो तो आज गुरूब से पहले ज़रूर कर लें।

ज़रूरी नोटः– रमी कुरबानी, हलक़ ये सारे काम क्रमानुसार होना चाहिए, यदि ये काम क्रमानुसार न हुए तो दम देना पड़ेगा, तलबिया के शब्द हाजी को भलीभांति याद होना चाहिए, हज के अवसर पर उठते बैठते चलते फिरते तलबिया पढ़ता रहे, इसका पढ़ना, 10 जिलहिज्जा को बड़े शैतान को रमी करने के बाद बन्द हो जाएगा। **तलबिया के शब्दः**

''लब्बैक अल्ला हुम्मा लब्बैक, लब्बैक लाशरीका लका लब्बैक, इन्नल हम्दा, वन नेमता लका, वलमुल्क ला शरीका लक।

अनुवादः– मैं हाजिर हूँ ऐ अल्लाह मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ तेरा कोई शरीक़ नहीं, मैं हाज़िर हूँ, बेशक तमाम तारीफ़ें और नेमतें तेरी ही हैं, और बादशाहत भी, तेरा कोई शरीक़ नहीं।

हज से संबंधित सारे आमाल और अरकान मक्का मुअज़्ज़मा और उसके क़रीबी मुक़ामात मिना, अरफ़ात, मुज़दलफ़ा में अदा किये जाते हैं, हाजियों के लिए ज़रूरी है कि वह मदीना मुनव्वरा भी हाजिरी दें जिस तरह हरमे मक्की है उसी तरह हरमे मदनी है।

मदीना मुनव्वरा की फ़ज़ीलत से मुतअल्क़ि बहुत सी हदीसें हैं जिनमें उसकी अज़मत बड़ाई फ़ज़ीलत और बलन्द मुक़ाम व मरतबा का बयान है, और क्यों न हो? ये हरमे रसूल है, ये दारे हिजरत है, यहीं रहमतुल लिल आलमीन की आराम गाह है, यहां के बाशिन्दे रहने वाले, फ़ख़्रे दोआलम सल्ल0 के पड़ोसी हैं यहां जिसको ईमान की हालत में मौत आए उसकी क़िसमत के क्या कहने, उसके लिए तो शफ़ाअत वाजिब हो जाती है।

मस्जिद–ए–नबवी की बड़ी फ़ज़ीलत है, अल्लाह के नज़दीक़ उसका बड़ा सम्मान है, उसमें नमाज़ पढ़ने वालों को कई गुना सवाब मिलता है, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है मेरी इस मस्जिद में नमाज़ हर मस्जिद में नमाज़ से हज़ार गुना अफ़ज़ल (सर्वश्रेष्ठ) हैं मस्जिदे हराम के अतिरिक्त, मस्जिदे नबवी उन तीन मस्जिदों में से एक है जिनके लिए सफ़र करना उचित है, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया केवल तीन मस्जिदों के लिए कजावे बाँधे जा सकते हैं यानी सफ़र किया जा सकता है, मस्जिदे हराम, मेरी ये मस्जिद और मस्जिद अक़सा, मस्जिदे नबवी को एक ऐसी विशेषता प्राप्त है जो किसी को प्राप्त नहीं है। और वह रौज़–ए–पाक है जिसके संबंध में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु ने फरमाया मेरे घर और मेम्बर के बीच की जगह जन्नत के बाग़ों में एक बाग़ है। अगर सरलता पूर्वक हाजी उस जगह पहुँच सकता हो तो उस जगह नमाज़ ज़रूर पढ़ ले, बड़ी फ़ज़ीलत की जगह है, मस्जिदे नबवी में मुस्तक़िल नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत बयान करते हुए अल्लाह के नबी ने फरमायाः जिसने मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें इस तौर से पढ़ीं कि एक नमाज़ की क़ज़ा नहीं हुईं तो उसके लिए आग से मुक्ति, अज़ाब से नजात और निफ़ाक़ (द्वेष) से दूरी लिख दी गई।

हज के ज़माने में दुनिया के कोने–कोने से जब मुसलमान

हज करने आते हैं तो उनको आठ दिन मदीना मुनव्वरा में रहने की इजाज़त दी जाती है ताकि वह चालीस नमाज़ें पूरी करलें और अल्लाह की रहमतों से अपना दामन भरलें और जन्नत के हक़दार बनें।

मदीन–ए–मुनव्वरा के दौराने क़ियाम रौज़–ए–मुबारक पर हाज़िर होकर दुरूद, सलाम पेशे करें, अल्लाह तआला ने फ़रमायाः ''या अय्युहल लज़ीना, आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तसलीमा'' (सूरः अहज़ाब)

अनुवादः ऐ ईमान वालो! उन पर (नबी पर) दुरूद भेजो और ख़ूब सलाम भेजो, अदब व एहतिराम से धीमी आवाज़ में यूँ सलाम भेजेंः अस्सलामु अलैका या नबी अल्लाह, अस्सलामु अलैक या रसूलुल्लाह, व रहमतुल्लाह व बरकातुहू, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 की रिवायत है कि रसूले अक़दस सल्ल0 ने फ़रमायाः जब कोई मुझ पर सलाम भेजता है तो अल्लाह तआला मेरी रूह लौटा देता है ताकि उसके सलाम का जवाब देदूँ।

रौज़–ए–मुबारक के बारे में कुछ ज़रूरी बातेंः–

रौज़ए मुबारक में चार जालियां हैं पहली और आखिरी जाली ख़ाली है। दूसरी जाली में लगा पीतल का गोल हलक़ा (रिंग) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रूए अनवर के बिलकुल सामने है जहां आपको सरवरे काइनात सल्ल0 की ही खिदमत में सलाम अर्ज करना है। तीसरी जाली में पीतल के दो हलक़े हैं पहले पर ख़लीफ़ा अव्वल हज़रत अबू बकर रज़ि0 पर और दूसरे पर ख़लीफ़ए दोम हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 पर सलाम अर्ज़ करें।

❖❖❖

मदीना पाक की बस्ती बड़ी पुरनूर बस्ती है
जहाँ शामो सहर अल्लाह की रहमत बरसती है
उसी को हर मुसलमां आँख, हर लमहा तरसती है
तमन्ना है दरख़तों पर तेरे रौज़े के जा बैठे
कफ़स जिस वक़्त टूटे ताएरे रूहे मुक़य्यद का
हम अपने घर से आक़ा इसलिए सूऐ हरम निकले
कि उस पुर नूर बसती में हमारा काश दम निकले
तो फिर हो दर्द दिल काफूर और सीने से दम निकले
तमन्ना है दरख़तों पर तेरे रौज़े के जा बैठे
क़फ़स जिस वक़्त टूटे ताएरे रूहे मुक़य्यद का
या रब्बे सल्ले व सल्लिम दाइमन अबदा

पृष्ठ .....06... का शेष

8. अरब के मुश्रिक अल्लाह के नाम ''रहमान'' को नहीं मानते थे, जब मुसलमानों से यह नाम सुनते तो कहते कि यह लोग हमको मना करते हैं और ख़ुद ही दो ख़ुदाओं को पुकारते हैं ''अल्लाह को और रहमान को इस आयत में इसी गलत बात का जवाब दिया जा रहा है कि रहमान भी अल्लाह ही का नाम है और उसके और भी नाम हैं उनमें से किसी नाम से उसको पुकारा जा सकता है, इससे तौहीद पर कोई आंच नहीं आती, आगे कुरआन की तिलावत (पाठ) के समय बीच की आवाज़ रखने का निर्देश हो रहा है, कुछ हदीसों में है कि ऊँची आवाज़ से नमाज़ों में तिलावत की जाती तो मुश्रिक लोग विभिन्न प्रकार से मज़ाक उड़ाते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हलकी आवाज़ में तिलावत (पाठ) शुरु कर दी, उसपर यह आयत उतरी कि न बहुत ऊँची आवाज़ हो और न बहुत नीची, फिर सूरः का समापन शुद्ध तौहीद के उल्लेख पर हो रहा है कि वह हर ऐब और कमज़ोरी से पवित्र है उसको किसी की मदद की ज़रूरत नहीं।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

अबुल फजल और दीन–ए इलाही:–

लेकिन जो लोग अंधविश्वास की गर्द में अटे हुए थे, उसके विरोधी हो गए। लेकिन सचेत दिल और आँख वालों ने उसको समय का इमाम और इज्तेहाद करने वाला घोषित कर दिया जो उसने अपनी वास्तविकता को देखकर स्वीकार भी कर लिया। इससे अबुल फजल के कथनानुसार गलत दृष्टिकोण रखने वालों को दुख पहुँचा और वह पुरानी परम्पराओं के कारण बकवास करने लगे और खुदाई का दावा करने का आरोप लगाया और यह बात फैलाया कि वह अहमद या मुहम्मद (सल्ल0) के धर्म को अच्छा नहीं समझता। इसीके बाद उसने खुदा को पहचान की भावना में आदेश दिया कि वर्ष के विशेष महीनों में चूहे न मारे जाएँ। चीते, खरगोश और मछली का शिकार न हो। भेड़ और मुर्ग ज़बह न किए जाएँ आदि और जब उसने आध्यात्मिक नेता बनकर मार्गदर्शन करना और उपदेश देना आरम्भ किया तो सूरज, आग, चिराग की पूजा करने लगा। आवागमन का समर्थक हो गया, सूअर के हराम होने का समर्थक नहीं रहा, माँस न खाने का उपदेश दिया, खतना और कफन–दफन और सम्बन्धियों में विवाह करने को नापसंदीदा घोषित कर दिया।

दीन–ए–इलाही तो अकबर के जीवन में मृत्य प्राय होने लगा था। उसको जीवित रखने के लिए अबुल फजल जैसे बुद्धिमान दोस्तों और जादू की तरह भाषा लिखने वालों की आवश्यकता थी। लेकिन अबुल फजल की हत्या अकबर के जीवन में ही हो गयी थी जिसके बाद अकबर की पवित्रता, खुदा का बोध, सच्चाई, सच्चाई की तलाश, सुलह पसंदी, उदार दृष्टि, जादू नफ़्सी और इज्तेहाद भरी रहस्यों के खोलने की योग्यता, भावों की दुनिया का दर्शन, आध्यात्मिक कृपा को समझने वाला कोई नहीं रहा। यह धर्म तो मात्र अबुल फजल के अच्छे तर्कों के कारण बचा हुआ था। वह मरा तो यह धर्म भी अपनी मौत मर गया और यदि ''प्रायस'' द्वारा तुज्क–ए जहाँगीरी के अंग्रेजी अनुवाद के कुछ टुकड़ों को विश्वसनीय समझा जाए तो अकबर ने अपने जीवन में ही अपने मन के कब्रिस्तान में अपने नये धर्म को दफन कर दिया। वह इसको दफन न करता तो जहाँगीर और शाहजहाँ उसका उल्लेख किसी न किसी सिलसिले में अवश्य करते। लेकिन उसकी आने वाली नस्ल की जुबान पर कभी इस नये धर्म का नाम न आया। इस धर्म से पहले कबीरदास ने वही आवाज़ उठायी थी। जो अकबर ने उठायी। यद्यपि कबीर की आवाज़ भी बहुत दूर तक न जा सकी फिर भी कबीरपंथियों का छोटा सा समूह अब भी हिन्दुस्तान में मौजूद है। लेकिन दीन–ए–इलाही के मानने वालों का नामोनिशान नहीं मिलता। हालाँकि इतिहास की किताबों में इस धर्म पर शोधपूर्ण चर्चा जारी है मुसलमानों ने तो दीन–ए इलाही को मुल्ला अब्दुल क़ादिर के लेखों की

रोशनी में समझने की कोशिश की और उसको एक धार्मिक खुराफ़ात समझकर निरस्त कर दिया। उलमा ने हर ज़माने में उससे घृणा प्रकट की। हज़रत मुजद्दिद अल्फसानी (शेख अहमद सरहिन्दी) के इस धार्मिक विचलन से इस्लाम को जो हानि पहुँची थी, उसको मिटाने के लिए इस्लाम के नवजागरण और उसके लिए आह्वान की नीति से काम लिया जिसके बाद वह मुजद्दिद अल्फसानी के नाम से याद किए जाने लगे। उन्होंने ने तो अकबर के जीवन में ही अबुल फजल से यह कहकर अकबर के धार्मिक विचलन पर चोट की कि ''बादशाह अधर्मी'' है, उस पर विश्वास नहीं है।

उनके बाद सभी उलमा ने इस धार्मिक विचलन को गुमराही घोषित करके उससे अपने आपको अलग कर लिया।

वर्तमान समय के उलमा ने भी उससे अपनी बेज़ारी प्रकट की है।

मौलाना मनाज़िर अहसन गीलानी ने अल फुरकान के मुजद्दिद अल्फसानी विशेषांक में दीन–ए–इलाही को एक बड़ा फितना घोषित किया है।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद एक बहुत उदार और बड़े दिल वाले आलिम थे। उन्होंने मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूँनी और अबुल फज़ल दोनों की किताबों को सामने रख कर दीन–ए इलाही पर बहुत ही व्यापक दृष्टि से टिप्पणी लिखी है जो शोधपूर्ण भी है, आलोचनात्मक भी और निष्पक्ष भी। वह लिखते हैं:–

अकबर के नेतृत्व के रिपोर्ट कार्ड की स्थिति यह है कि शेरशाह और सलीम शाह के ज़माने में दुनियादार आलिमों की अधिकता और उनकी ताकत ने देश की शान्ति और सुरक्षा को उलट–पलट करके रख दिया था विशेष रूप से अल्लाह वालों और सच्चाई पर क़ायम रहने वालों पर उन्होंने अपनी सांसारिक माया और सत्ता के नशे में बड़े अत्याचार किए थे। जिस किसी को सांसारिक मोह से बेपरवाह और सच्चाई का आदेश और बुराई से रोकने में सक्रिय देखते। अपने सांसारिक मोह का प्रतिद्वन्दी समझकर विरोधी हो जाते और कोई न कोई आरोप लगाकर उनके लिए परीक्षा और कठिनाई पैदा कर देते। अकबर के आरम्भिक दौर तक यही स्थिति रही। इन सरकारी उलमा में दो व्यक्तियों ने सांसारिक मोह में बहुत ख्याति प्राप्त की, मख़्दूमुल मुल्क मुल्ला अब्दुल्लाह सुल्तानपुरी और शेख अब्दुल नबी सदरुस्सुदूर। उन्हीं लोगों के अत्याचार और भेदभाव का एक शिकार खानदान मुल्ला मुबारक का भी था और मुल्ला के ज्ञान के सागर, फकीरी और निःस्वार्थ और निडरता, सच्चाई के आदेश की गतिविधियों से वह बहुत विवश हो गए थे। एक जमाने के बाद जब परिस्थितियाँ बदली और मुल्ला मुबारक के परिवार को उत्थान प्राप्त हुआ तो उन्होंने लोगों के जोर को तोड़ना चाहा और इसकी युक्ति यह दिखायी दी कि धार्मिक भेदभाव की तीव्रता को किसी तरह कम किया जाए। अतः हिकमत व तहकीक–ए जदीद (विवेक और आधुनिक शोध) के नाम से उन्मुक्त विचारों और तानाशाही की हवाएँ चलने लगीं लेकिन अफसोस कि बीमारी को मिटाने के लिए ऐसा नुस्खा अपनाया गया जो आगे चलकर एक दूसरी बीमारी पैदा करने का कारण बन गया। पहले इफरात था तो अब तफ़रीत हो गयी। पहले भेदभाव और अंधविश्वास था तो अब उनकी जगह अनिश्वरवाद और अधर्म ने अपने कोपल निकाले और इतिहास और धर्म के हर पिछले

शेष पृष्ठ ....16..पर

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

हिर्स और लालचः-

लालच ऐसी बीमारी है कि उसका कोई इलाज नहीं, लालची की प्यास कभी नहीं बुझती, हदीस में आता है किः—

अनुवादः— दो हरीस ऐसे हैं कि उनकी प्यास कभी नहीं बुझती, ''एक इल्म का हरीस और एक माल का हरीस''।

(मुस्तदरक हाकिमः 312)

इन्सान के अन्दर जब लालच पैदा हो जाती है तो वो "हल मिम मजीद" (और ज़्यादा और ज़्यादा) का नारा लगाता रहता है, हदीस में आता हैः—

अनुवादः— ''इंसान को अगर सोने की पूरी घाटी मिल जाए तो वो तमन्ना करेगा कि दो वादियाँ हो जाएं और उसका मुँह मिट्टी ही से भर सकता है, और जो तौबा करे अल्लाह उसकी तौबा कुबूल फ़रमाता है"। (बुखारी शरीफ़ः 6439)

इन्सान के अन्दर लालच पैदा हो जाए तो वो उसको बड़े ख़ैर से महरूम कर देती है, वो ख़र्च भी नहीं कर पाता, कंजूसी लालच के साथ जुड़ी हुई है, ऐसा इंसान लोगों से दूर हो जाता है, सब उससे पनाह मांगते हैं, और वो कभी कामयाब नहीं हो सकता, अल्लाह का इरशाद हैः—

अनुवादः—"और जो भी अपने जी की लालच से बचा लिया गया तो ऐसे लोग ही कामयाब हैं"। (अल हश्रः 9)

आमतौर पर घर की बर्बादी का भी यही ज़रिया बनती है, आदमी बहुत ही कंजूसी से काम लेता है और रोज़ लड़ाई झगड़े होते हैं, फिर लालच सिर्फ़ यही नहीं कि अपने माल को खर्च नहीं करना चाहता बल्कि उसकी निगाह दूसरों के माल पर होती है कि सब कुछ उसी को मिल जाए, ऐसा व्यक्ति बहुत ही ख़ुदगर्ज़ (स्वार्थी) बन जाता है, जबकि इस्लाम एहसान व त्याग की तलक़ीन जगह जगह करता है, और त्याग करने वालों की तारीफ़ करता हैः—

अनुवादः— ''और वो (दूसरों को) अपने आपसे आगे रखते हैं चाहे वो खुद तंग हाली के शिकार हों"।

(अल हश्रः 9)

कभी—कभी ये लालच आदमी को ऐसी बुराईयों पर उभार देती है कि वो जान लेने के लिए तैयार हो जाता है, ताकि उसको दौलत हासिल हो सके, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसकी बुराई का ज़िक्र करते हुए फरमायाः—

''हिर्स व लालच से बचो कि इसी ने तुम से पहलों को बर्बाद किया, इसी ने उनको उभारा कि उन्हों ने खून बहाया, और हराम को हलाल समझा, ये मुस्लिम शरीफ की रिवायत है।

(सही मुस्लिमः 387/2)

सहीह इब्ने हिब्बान और हाकिम में इससे ज़्यादा तफसील से आया है, फरमायाः— ''हिर्स से बचो क्यों कि इसी ने अगलों को इसकी दावत दी कि उन्होंने बे गुनाहों का खून बहाया, इसी ने अगलों को दावत दी कि उन्होंने रिश्ते के हक़ को काटा और इसी ने दावत दी कि हराम को हलाल समझा। (इब्ने हिब्बान व मुस्तदरक हाकिम 12/1)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी एक तकरीर में फरमायाः— ''हिर्स से बचो क्योंकि तुम से पहली कौमें इसी हिर्स से तबाह हुईं, इसी ने उनको कहा तो उन्हों ने रिश्ते के हक को काटा, इसी ने कहा

तो उन्हों ने कंजूसी की, इसी ने उनको बड़े बड़े गुनाह के लिए कहा तो उन्होंने गुनाह किये''।

(अबू दाऊदः 238/1)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः– इंसान में सबसे बुरी बात कुढ़ने वाली हिर्स और घबरा देने वाली नामर्दी है''। (इब्ने हिब्बान व अबू दाऊदः 340/1)

हरीस आदमी हमेशा इस गम में कुढ़ता रहता है कि ये नहीं मिला वो नहीं मिला, फुलां के पास ये है, मेरे पास नहीं, इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिर्स को हमेशा गम और कुढ़न में रखने वाली फरमाया, नसाई में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "ईमान और हिर्स एक दिल में जमा नहीं हो सकते"। (45/2)

वजह जाहिर है कि मुकम्मल ईमान का नतीजा सब्र, तवक्कुल और कनाअ़त है और हिर्स का नतीजा बे इत्मिनानी, बे सबरी और हवस है, एक बार बुराई के लहजे में फ़रमाया कि "इन्सान बूढा होता है, मगर उसकी दो चीजें जवान रहती हैं, जीने की ख़्वाहिश और माल की हिर्स''। (तिर्मिज़ी शरीफः 59/1, मुस्तदरक हाकिमः 328/4)

कई सहाबियों का बयान है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया दो भेड़िये जो बकरियों के झुण्ड में छोड़ दिए जाएं वो उनको उतना बर्बाद नहीं करते जितनी माल और इज़्ज़त व मनसब की हिर्स इंसान के दीन व ईमान को बर्बाद कर देती है।

(तिर्मिज़ी 63/2, सीरतुन्नबीः 432/6)

❖❖❖

पृष्ठ .....14... का शेष

युग की तरह इस युग में भी इफरात और तफ़रीत के दो समूह पैदा हो गए, पहला समूह संसार से मोह करने वाले और भेदभाव करने वाले अज्ञानियों का था जो अपनी कामनाओं की पूजा और भेदभाव और अज्ञानता से वास्तविक धर्म को बदनाम कर रहे थे। दूसरा समूह उनके मुकाबले में शोध और नये इज्तेहाद और चिन्तन का दावा करने वालों का था जिन्होंने विवेक और बुद्धि और धर्म को बुद्धि और विवेक के नाम से अधर्म और उन्मुक्तता की गर्म बाज़ारी कर रखी थी और सच्चाई वालों और सन्तुलन वालों का गिरोह इन दोनों से अलग था। वह जिस तरह पहले गिरोह के घृणित जोर के गिरोह से दूर थे उसी तरह दूसरे गिरोह के निकट बुद्धि और विवेक के चरमपंथ से भी अलग थेः–

यही परिस्थिति आज भी सामने है, धर्म के दुकानदारों ने अज्ञानता और अन्धानुकरण और भेदभाव और स्वार्थ का नाम धर्म रखा है और स्वतन्त्र विचार, आधुनिक शोध के बुद्धि बेचने वालों ने अनिश्वरवाद और उन्मुक्तता को विवेक और इतिहास के धोखे से सँवारा है। न मदरसे में ज्ञान है, न मस्जिद के मेहराब में सच्चाई और न मैकदे में दिखावा न करने वाले शराबी। सच्चे और नेक लोग सबसे अलग हैं और सबसे पनाह माँगते हैं। उनका रास्ता अलग है।

❖❖❖

अनुरोध

हम अपने पाठकों की दीनी मालूमात और धार्मिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए ''क़ुरआन की शिक्षा'' और ''प्यारे नबी की प्यारी बातें'' जैसे लेख निरंतर प्रकाशित करते हैं। उनका सम्मान हमारा और आपका कर्तव्य है। इसलिए जिन पन्नों पर ये आयतें और हदीसें लिखी हैं, उनका एहतिराम हमारी दीनी जिम्मेदारी है इसका ख़्याल रखें, इंशाअल्लाह हम सवाब के मुस्तहिक़ एवं पात्र होंगे।

(इदारा)

दुनिया का पहला मानवाधिकार चार्टर

(इदारा)

अंतिम हज का संबोधन

अपने अंतिम हज के अवसर पर पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) ने अपने सवा लाख अनुयायियों के समक्ष जो महत्वपूर्ण भाषण दिया था, वह हदीस की पुस्तकों में पूर्ण रूप से सुरक्षित है। यह आदेश–निर्देश मानवाधिकारों का ऐसा चार्टर है जिसका उदाहरण पहले तो क्या आज भी प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। इसकी विशेषता यह है कि यह समाज में पूरे तौर पर लागू हुआ। इस महत्वपूर्ण भाषण का सार प्रस्तुत है।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल0) ने कहा– ''लोगो! मेरी बात ध्यान से सुनो, हो सकता है इस वर्ष के बाद इस स्थान पर मैं तुम से कभी न मिल पाऊँ। अज्ञानकाल की समस्त रीतियां मेरे पैर के नीचे हैं (अर्थात निरस्त कर दी गयी हैं), लोगो! तुम सबका पाहनहार एक है और बाप भी एक है। किसी अरब वाले को किसी गैर–अरब पर बड़ाई नहीं, न किसी गोरे को काले पर, बड़ाई केवल परहेज़गारी के आधार पर है।

हर मुसलमान दूसरे का भाई है, लोगो। तुम्हारी जान और माल एक–दूसरे पर हराम हैं। जिस प्रकार यह (हज का) दिन है, यह महीना है और वह नगर (मक्का) है। (अर्थात जान–माल को हानि पहुंचाना निषिद्ध है)।

अपराधी अपने अपराध के लिए स्वयं ज़िम्मेदार है, उसके पिता या पुत्र से बदला नहीं लिया जाएगा। तुम्हारे गुलाम– तुम जो स्वयं खाओ वही उनको खिलाओ, जो स्वयं पहनो वही उनको पहनाओ। अज्ञानकाल के हत्या के समस्त प्रकरण (जिसमें बदला लेने का चक्र चलता था) निरस्त किये जाते हैं। ब्याज के सभी अनुबंध समाप्त किये जाते हैं, हाँ अपना मूलधन प्राप्त करने के तुम अधिकारी हो। सबसे पहले मैं अपने ही परिवार के अब्बास–बिन–अब्दुल मुत्तलिब का सूद ख़त्म करता हूं।

ऐ लोगो! तुम अपनी पत्नियों पर अधिकार रखते हो और वे भी तुम पर अधिकार रखती हैं। तुम्हारी ओर से उनकी ज़िम्मेदारी है कि वे तुम्हारे बेडरूम (शयनकक्ष) में किसी गैर को न आने दें, क्योंकि यह तुम्हें सहन नहीं है और उन पर स्वयं भी अनिवार्य है कि वे अश्लीलता का कोई कार्य न करें। मैं औरतों के बारे में तुम्हें वसीयत करता हूं कि उनके साथ भला व्यवहार करो।

ऐ लोगो! मेरे बाद कोई संदेष्टा नहीं और न ही तुम्हारे बाद कोई नई उम्मत (समुदाय) पैदा होगी, इसलिए अपने पालनहार की उपासना करो, पाँचों समय की नमाज़ पढ़ो, रमज़ान मास के रोज़े रखो, अपने माल में से शुद्ध मन से ज़कात दो, अपने पालनहार के घर का (हज) करो और अपने अमीर (इस्लामी शासक) का आज्ञापालन करो ताकि तुम्हें स्वर्ग प्राप्त हो। यदि कोई हब्शी गुलाम अमीर हो और वह अल्लाह की किताब कुरआन के अनुसार चले तो उसकी बात सुनो और आज्ञापालन करो।

मैं तुम्हारे बीच ऐसी चीज़ छोड़ रहा हूं कि यदि तुम उसे मज़बूती से पकड़े रहोगे तो कभी गुमराह नहीं हो सकते वह है अल्लाह की किताब (कुरआन) और मेरी सुन्नत (हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) का व्यवहार जो हदीस के रूप में सुरक्षित है)।

''अंत में निर्देश दिया कि उपस्थित जन इन उपदेशों को उन लोगों तक पहुंचा दें जो यहां उपस्थित नहीं है। ◆◇◆

तालीम के साथ तरबियत और हुनरमंदी

इं0 जावेद इक़बाल

तालीम की अहमियत हर जमाने में महसूस की गई है। दुनिया की कोई कौम शिक्षा के महत्व का इनकार नहीं कर सकती। तालीम के जरिए ही इंसान को भले बुरे की पहचान होती है। सीधे सच्चे रास्ते की तरफ रहनुमाई हासिल होती है। इस्लाम की तो पहली हिदायत ही इकरा यानी ''पढ़ो'' शब्द से शुरू होती है। ज़रूरी है कि तालीम अल्लाह के बताए हुए तरीक़े पर और उसके नबियों के सिखाए हुए अंदाज़ पर हो, तभी तो शुरू में ही ''पढ़ो'' के साथ यह क़ैद लगादी कि ''पढ़ो अपने रब के नाम के साथ'', रब यानी पालनहार भी कैसा? जिसने सब कुछ पैदा किया, और इंसान को तो उसने खून की एक जमी हुई फुटकी से पैदा किया है। यह जुमला इशारा कर रहा है कि इंसान को अपनी पैदाइश से लेकर क़ायनात की एक एक चीज़ पर ग़ौर व फिक्र करना चाहिए। यह बड़ा ही महत्वपूर्ण काम है इसके महत्व को जताने और इसका रास्ता सुझाने के लिए फिर फ़रमाया कि तुम्हारा रब–पालनहार बड़ा करीम है वह बड़ा एहसान करने वाला है उसने इल्म का रास्ता कलम के जरिए खोला है जो शख़्स/व्यक्ति भी कलम का इस्तेमाल करके इल्म हासिल करने की कोशिश करेगा उसे हम वह बातें सिखायेंगे जिन्हें वह नहीं जानता होगा। पता चला कि इल्म के समन्दर में गोते लगाने के लिए कलम का इस्तेमाल निहायत ज़रूरी है। इल्म की कोई हद नहीं, खुद उस रब्बे–क़ायनात ने बताया है कि यदि सारे वृक्ष (दरख़्त) क़लम बना दिये जायें और सातों समन्दर रोशनाई, तब भी तेरे पालनहार की बातें खतम न होंगी (31/27)। यह बातें क्या हैं? यही तो क़ायनात के राज–रहस्य हैं। जो जितना ग़ौर व फिक्र करेगा उतना ही उस पर यह रहस्य खुलेंगे। हज़ार साल पहले की दुनिया पर नज़र डालिए, हज़ार साल तो बहुत हैं, सौ–दो सौ साल पहले की दुनिया को ही देख लें, न बिजली थी न पंखे थे, न डीजल था न पैट्रोल और न पकवान गैस। गरज यह कि आज की जिन आसाइशों के बीच हमारी ज़िन्दगी गुज़र रही है वह हज़ार साल पहले सपनों में तो हो सकता है रही हो मगर हक़ीक़त में कुछ न था क्योंकि मालिके हक़ीक़ी ने जिस के पास हम सभी को लौट कर जाना है, अपनी किताब में, जिस में शक व शुब्ह की कोई गुंजाइश नहीं, ज़िन्दगी की ज़रूरतों को हासिल करने के स्पष्ट इशारे कर दिए हैं। कहीं दाऊद अलै0 की कारीगरी का जिक्र है कि वह जंग में काम आने वाले लोहे के कवच बनाते थे। कहीं नूह अलैहिस्सलाम के द्वारा लकड़ी की पहाड़ जैसी विशाल नौका बनाने का बयान है। कहीं सुलैमान अलै0 के उड़ने वाले तख़्त का बयान है। इंसान की पैदाइश का तरीक़–ए–कार तो इतनी तफ़सील से *Stage by stage* सूरः मोमिनून में बयान हुआ है कि पिछली सदी के *Zoology* के *Professor* भी उसे जान कर हैरान रह गए थे।

साफ ज़ाहिर है कि इल्म के दायरे से न अस्पताल बाहर हैं न कल–कारखाने। इल्म के बग़ैर न तिजारत कामयाब हो सकती है और न वकालत। इल्म के बगैर न जंगी हथियार बनाए

जा सकते हैं ना नागरिकों के लिए आवासीय इमारतें।

लिहाजा पिछले दौर की गल्तियों को नज़र अंदाज़ करते हुए अब हमें इल्म को दीनी और दुनियावी खानों में बांटने की ग़लती नही करना चाहिए। जब क़ायनात के मालिक व मुख़्तार ने इल्म को खानों में नहीं बांटा तो हम कौन होते हैं उसे बांटने वाले ?

होना तो यह चाहिए कि इब्तिदाई दर्जों में कुरआन व हदीस की तालीम के साथ साथ ज़रूरियात–ए–जिंदगी से ताल्लुक रखने वाली तालीम जिसे हम दुनियावी कहते हैं वह भी निसाब में शामिल की जाए। जिस तरह स्कूल कालेज के निसाब में इब्तिदाई दर्जों में आठ आठ सब्जेक्ट शामिल होते हैं। इतिहास भुगोल समाज शास्त्र वगैरह सभी की थोड़ी थोड़ी जानकारी बच्चों को दी जाती है मगर आगे चलकर उनकी दर्जाबंदी होती है। हिस्ट्री, ज्योग्राफी, सोशलाजी वगैरह में रुचि रखने वाले बच्चे आर्टस ग्रुप में जाते हैं। आर्थिक मामलों में रुचि रखने वाले बच्चे कामर्स ग्रुप में और तकनीकी कार्यों में दिलचस्पी रखने वाले बच्चे साइंस ग्रुप को चुन लेते हैं। आरंभ में साइंस ग्रुप भी दो शाखाओं में बंट जाता है, एक मेडिकल दूसरा इंजीनियरिंग। इस दर्जाबंदी का सिलसिला थमता नहीं है, हर ग्रुप की शाखाओं की शाखाएं होती चली जाती हैं और अपनी अपनी पसंद व दिलचस्पी के मुताबिक अलग अलग विषयों में लोग *Expertisation* हासिल करते हैं मिसाल के तौर पर कोई डॉक्टर दिल की बीमारियों का माहिर होता है, कोई हड्डी का, कोई बच्चों का तो कोई महिलाओं का। इसी तरह इंजीनियरिंग में कोई बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन का माहिर है तो कोई आर्कीटेक्चर में महारत रखता है। ज़रूरी नहीं होता कि सभी बच्चे *Expet* बन जायें, सभी *IAS & PCS* बन कर ऊँचे–ऊँचे ओहदों पर पहुँच जायें। कुछ उनमें *Office Assistant* बनते है, कुछ मेकेनिक और कुछ कम्पाउन्डर बनते हैं। समाज में उनकी अहमियत भी कम नहीं है बल्कि इन की ज़रूरत समाज में *Expet* से ज़्यादा है। अपने चारों तरफ नज़र दौड़ाएं आप देखेंगे कि माहिर इंजीनियर–डॉक्टर से ज़्यादा ज़रूरत माहिर मेकेनिक की होती है। एयर कंडीशनर बनाने वालों से ज़्यादा ज़रूरत उनकी सर्विस और रिपेयरिंग करने वाले की होती है। मोटर कार और बाइक बनाने वालों से ज़्यादा उसके मकेनिक की होती है। गाड़ी तो कारख़ाने से एक बार बन कर निकल आई मगर सड़क पर चलते हुए पंक्चर भी होगा गेयर भी फंसेगा क्लच एक्सलेटर ब्रेक वगैरह भी खराब होगा लिहाजा पंक्चर बनाने वाला भी चाहिए, मकेनिक भी चाहिए डेंटिंग–पेंटिंग वाला अलग चाहिए। इस तरह हम ने देखा गाड़ी बनाने वाले एक इंजीनियर की जगह हमें चार क़िस्म के कारीगरों की ज़रूरत पड़ती है और सभी अपनी अपनी जगह पर अहम हैं। किसी भी काम को हिकारत की नज़र से नहीं देखना चाहिए । हर हुनर अपनी जगह अहमियत का हामिल है। एक मुसलमान को तो इस बात की तरग़ीब रसूलल्लाह सलै0 के उसव ए मुबारक से मिलती है। हदीस शरीफ में है कि आप सल्ल0 घर के काम खुद कर लिया करते थे, जूती टूट जाती तो खुद गांठ लेते थे। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम कारोबार की लाइन से बढ़ई थे, दाऊद अलै0 लोहार थे। गरज यह कि हमें किसी भी काम को, किसी भी हुनर को हिकारत की नज़र से नहीं देखना चाहिए।

मदरसों के तलबा *(Students)* को अपनी पढ़ाई के दौरान कोई न कोई हुनर ज़रूर सीखना चाहिए। यह *Technology* का ज़माना है, आसाइशों का दौर है, आबादी के साथ साथ ज़रूरतें भी बढ़ रही हैं। इमारतें बनेंगी तो अच्छे राजमिस्त्री भी चाहिए, लोहार बढ़ई इलेक्ट्रीशियन पेंटर सभी तो चाहियें। फिर जब इमारतें बन कर तैयार होंगी तो उनमें लोग रहेंगे, लोग रहेंगे तो ए0 सी0 भी लगेंगे, पंखे भी बिकेंगे और गाड़ियां भी चलेंगी। गरज यह कि हर किस्म के कारीगरों की और हर किस्म की तिजारत की ज़रूरत बढ़ेगी।

मदरसों में पढ़ने वाले सभी बच्चे न तो बड़े आलिम बन पाते हैं और न ही बड़े उस्ताद, लेखक या ट्रांसलेटर, जैसी जिस की सलाहियत होती है, मेहनत और लगन होती है वैसा ही मुकाम उसे हासिल होता है। आलिम की सनद लेकर निकलने वाले ज़्यादातर बच्चे किसी मस्जिद के इमाम या मुअज़्ज़िन बन कर ज़िन्दगी गुजारते हैं। समाज में उनकी अकसरियत को वह अहमियत हासिल नहीं होती जो एक इमाम को मिलनी चाहिए, क्योंकि आलमियत अधूरी होती है, वह मसायल को हल करने की एहलियत नहीं रखते। एक बार का वाकिया है, मैं आलमियत की सनद रखने वाले तलबा की कलास में मैथ्स पढ़ा रहा था, तलबा को दिलचस्पी तो थी नहीं, वह ऊंघ रहे थे, मैथ्स की अहमियत दिल में बिठाने की गरज से मैंने कहा जब आप आलिम की हैसियत से अपने वतन जाओगे और कोई शख़्स वरासत की तकसीम का मसअला लेकर आपके पास आएगा जिसके दो भाई और चार बहनें होंगी तब आप कैसे माल की तकसीम करोगे, इसलिए मैथ्स का सीखना भी एक आलिम के लिए ज़रूरी है। दिलचस्प और काबिले तवज्जे वह जवाब है जो उनमें से एक लड़के ने दिया, बोला आप जैसा कोई मैथ्स जानने वाला मुहल्ले में होगा, उससे पूछ लूंगा।

लिहाजा मदरसों के तलबा को खास तौर पर मेरा मशविरा है कि आप कुरआन व हदीस की अपनी तालीम के साथ किसी न किसी तरह का कोई हुनर ज़रूर सीखें, किसी भी काम को हक़ीर न समझें उसमें महारत हासिल करें। ईमानदार माहिर कारीगरों की समाज को बहुत ज़रूरत है और इज़्ज़त भी है, बशर्ते यह कि वह तालीमयाफ़्ता होने के साथ साथ मुहज्जब और ईमानदार भी हों। ज़ाहिर है कि आजकल के स्कूल कालेजों के माहौल से निकले हुए नौजवानों में वह तहजीब कहां जो मदरसे के आप जैसे बच्चों में पाई जाती है।

हुनरमंद माहिर कारीगर समाज के हर छोटे बड़े शख़्स के राब्ते–संपर्क में आता है अगर वह दीनदार और मुहज्जब होगा तो अपने दीन की छाप सामने वाले पर किसी न किसी अंदाज़ में ज़रूर छोड़ेगा। आप भले ही ज़बान से कुछ न कहें मगर आपका कस्टमर आप से प्रभावित अवश्य होगा।

साउथ इंडिया में इस्लाम अरब के ताजिरों के प्रभाव से फैला और हमारे नार्थ साइड में हुक्मरानों और सूफियों के प्रभाव से। यही वजह है कि साउथ के मुसलमान सादा लौह, तालीम में आगे, मुखलिस और दीनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाले हैं। जबकि हमारे शिमाली इलाके में सियासत, छल कपट, बिदअत, गुमराही और जिहालत ज़्यादा है।

❖❖❖

कुरबानी.... यानी सब कुछ खुदा के लिए

सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी

अल्लाह तआ़ला ने मुस्लिम उम्मत को कुर्बानी की शक़्ल में एक बेहतरीन तोहफ़ा अता फ़रमाया है जिसका मक़सद अपनी पसन्दीदा चीज़ों को ख़ुदा की राह में अपने रब की रज़ा के लिए कुरबानी करना और ईसार के जज़्बे को उभारना है। कुरबानी मतलब ''क़रीब होना'' या ''नज़दीक होना''। कुरबानी के ज़रिये बन्दा अल्लाह से क़रीब होता है अब यह अल्लाह से क़रीब होना किसी भी तरह से हो सकता है, ख़्वाह वह जान के ज़रिये हो या माल के ज़रिये हो, औलाद के ज़रिये हो या फिर किसी और पसन्दीदा चीज़ को ख़ुदा की राह में देने के ज़रिये हो।

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को ईदुल अज़हा में कुर्बानी करने का हुक्म फ़रमाया और इसी हुक्म पर बन्दा जब अल्लाह की रज़ा के लिए जानवर के गले पर छुरी फेरता है तो इसका मतलब यह होता है कि उसने अल्लाह के हुक्म से अपनी उन सभी ख़्वाहिशात पर, अपने उन सभी इरादों पर, अपनी उन सभी चाहतों और तमन्नाओं पर छुरी चलाई है जिन से अल्लाह और उसके रसूल ने रोका है और बचने का हुक्म दिया है। और इस कुर्बानी से बन्दा अल्लाह की रज़ा और ख़ुशनूदी हासिल करता है। तो अब इसी कुर्बानी को आइडियल बनाते हुए दुनिया का कोई भी काम हो उसे अल्लाह और रसूल के बताए हुए तरीक़े पर ही करना और बजा लाना चाहिए जिस से अल्लाह और उसके रसूल राज़ी और ख़ुश हों।

कुरबानी से इन्सान अपने अन्दर ईसार का जज़्बा जगाता है, इस अमल से उसके अन्दर दूसरों के साथ अच्छा सुलूक करने, उनकी मदद करने, उनके काम आने और अपनी ज़रूरतों को पीछे करके दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करने का जज़्बा परवान चढ़ता है।

अल्लाह तआ़ला ने जब अपने नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से अपने बेटे की कुरबानी पेश करने का हुक्म किया तो उन्होंने बग़ैर किसी शक और बिना किसी हिचकिचाहट के अपने आप को इसके लिए तैयार कर लिया और अपने लायक़ बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम (जो कि ख़ुद भी अल्लाह के नबी होने वाले थे) उनसे इसका तज़किरा किया तो उन्होंने भी अल्लाह की रज़ा के लिए अपने आपको पूरी तरह पेश कर दिया और फ़रमाया कि ***''ऐ वालिदे मुहतरम! आपको जो हुक्म दिया जा रहा है वह कर डालिये, अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वाला पायेंगे।''***

(सूरः साफ़्फ़ात, आयतः 102)

इस जुमले में एक बात यह भी पोशीदा है कि इतने अज़ीम नबी जो कि अल्लाह के इतना क़रीब हैं कि अल्लाह के ख़लील और दोस्त कहलाते हैं और उनके बेटे जो कि ख़ुद भी नबी हैं वह एक अज़ीम अमल अंजाम देने जा रहे हैं यानी एक नबी अपने बेटे को ज़बह करने जा रहा है और बेटा ज़बह होने के लिए भी तैयार है लेकिन इस अज़ीम अमल में भी उनको अल्लाह की चाहत और अल्लाह के इरादे का पास व लिहाज़ है

और यह फ़रमा रहे हैं कि ***"अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएंगे"*** यह दावा न किया कि हम इतना बड़ा अमल अंजाम दे रहे हैं तो हम अपनी मर्ज़ी के मालिक हैं और हम सब कुछ कर सकते हैं बल्कि अल्लाह की मशिय्यत, उसकी मर्ज़ी, उसके इरादे और उसकी रज़ा को सबसे आगे रखा कि अगर वह चाहेगा तभी हम सब्र के साथ इस अमल को अंजाम दे सकते हैं वरना हमारी कोई हैसियत व ताक़त नहीं कि हम कोई नेक काम अंजाम दे सकें।

आज हमें ख़ुदा का हर लम्हा शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उसने हमें इस अज़ीम अमल यानी जानवरों की क़ुरबानी का हुक्म देकर हम पर बहुत बड़ा एहसान किया, अगर अल्लाह हम से अपनी औलादों की क़ुरबानी का सवाल कर लेता तो सोचिए कि हमारा क्या हाल होता! और हम कैसी मुश्किल में फँस जाते और हमारे लिए कितनी बड़ी आज़माइश होती! लेकिन अल्लाह ने हम सबको इस बड़ी आज़माइश से बचाया भी और इस क़ुर्बानी के ज़रिये हमारे ही फ़ायदे का सामान मुहय्या कर दिया और हमारे लिए ही आसानियाँ फ़राहम कर दीं।

हमें इस बात पर भी अल्लाह का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि उसने हमें अपने इस हुक्म को पूरा करने के तुफ़ैल में किन–किन नेमतों से नवाज़ा कि हम क़ुरबानी अपने रब की रज़ा के लिए कर रहे हैं और इसका फ़ायदा तोहफ़े की शक्ल पूरी इन्सानियत को मिलता हुआ नज़र आ रहा है कि हम सब के लिए बेहतरीन ग़िज़ा का इन्तिज़ाम, साथ–साथ दुनियावी तिजारत के तौर पर इन्सानों की एक बड़ी तादाद इस से फ़ायदा उठा रही है, चाहे वह जानवरों के पालने वाले हों, चाहे वह जानवरों को लाने ले–जाने वाली गाड़ियों को चलाने वाले हों, चाहे वह जानवरों के चारे का कारोबार करने वाले हों, चाहे खालों की तिजारत करने वाले हों, चाहे वह गोश्त को पकाने में इस्तेमाल होने वाले मसालों और अनाज का कारोबार करने वाले हों, चाहे वह जानवरों के बाज़ार और मंडियों का इन्तिज़ाम करने वाले हों सभी इस से फ़ायदा उठा रहे हैं और एक बहुत बड़ी तिजारत का फ़ायदा क़ुर्बानी के तुफ़ैल पूरी दुनिया के इन्सानों को मिल रहा है और बहुत से लोगों की साल भर की रोज़ी–रोटी का एक बेहतरीन इन्तिज़ाम हो रहा है।

देखने में क़ुर्बानी सिर्फ़ एक जानवर की होती हुई नज़र आती है लेकिन इस क़ुर्बानी के ज़रिये इन्सान अपनी ख़्वाहिशात, अपनी चाहतों, अपनी मर्ज़ी को पीछे करता हुआ नज़र आता है और अल्लाह के हुक्म के आगे अपना सर झुका लेता है। अपने अन्दर क़ुर्बानी का जज़्बा पैदा करते हुए अपने आपको ख़ुदा के सुपुर्द कर देना उसके हवाले कर देना और उसके हुक्म को आगे करके सब कुछ पीछे कर देना ही क़ुर्बानी का असल मक़सद है कि ख़ुदा ने जिन बातों और कामों से हमें रोका और मना किया है उन बातों और कामों को हम सिर्फ़ उसकी रज़ा के लिए छोड़ दें, अपनी ख़्वाहिशात को क़ुर्बान कर दें और उन से दूर रहें ताकि हमारा रब हम से राज़ी हो जाए और हमारी दुनिया व आख़िरत दोनों संवर सके। इस पर हम ख़ुदा का शुक्र अदा करने वाले बन्दे बनें और हमारी हर इबादत, हमारा हर काम, हमारी हर ख़्वाहिश और तमन्ना सब कुछ ख़ुदा के लिए ही हो। जैसा कि क़ुरआन में इरशाद हुआ है कि

शेष पृष्ठ ....27..पर

हज का एक अहम काम: शैतान को कंकरी मरना (मकसद और पैगाम)

मौलाना मुहम्मद ज़ैनुल हक़ नदवी

दुनिया में बड़े–बड़े कामों की यादगार मनाने का रिवाज और काबिल–ए–एहतराम शख़्सियतों के Statue बनाने का तरीका बहुत पुराना है। लेकिन आमतौर पर Statue लगा देने, कोई निशान बना देने या मुहब्बत को पेश करने के लिए सालाना प्रोग्राम कर देने को काफी समझा जाता है। जबकि वो शख़्सियत तो सालाना प्रोग्राम में याद कर ली जाती है लेकिन उनके ज़रिए जारी रोशन कारनामों को ज़िन्दा करने या उनके काबिल–ए– क़द्र कामों की नकल करने पर कोई तवज्जो नहीं होती।

इंसानों के लिए अगर कोई काबिल–ए–एहतराम नमूना हैं तो वो अंबिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलाम हैं। इस्लाम ने Statue बनाने और यादगार तामीर करने की पुरानी रस्म को छोड़ कर अंबिया–ए–किराम अलैहिमुस्सलाम के आमाल व अख़लाक़ की नक़ल करने का न सिर्फ़ हुक्म दिया बल्कि अज्र व सवाब की चीज़ बताया है। जिससे न सिर्फ़ उनकी याद हर वक्त ज़िन्दा रहती है बल्कि उन अंबिया की सीरत भी हर वक्त याद रहती है। खास तौर पर अबुल अंबिया हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बेमिसाल दीनी खिदमात और वफादारी को हर साल मुसलमान ज़रूर याद रखता है। अल्लाह तआला ने फरमाया है कि ऐ उम्मत–ए–मुस्लिमा! तुम्हारे लिए अल्लाह के पैगंबर इब्राहीम की जात में बेहतरीन नमूना है।

(सूरह मुमतहिनाः 4)

हज जैसा अहम तरीन फरीजा, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की जान कुर्बान करने वाली और वफा पूरी करने वाली यादगार का मजमूआ है।

इन दिनों हज करने वाले हज के सफर पर हैं और इस्लाम का अहम तरीन फरीजा अंजाम दे रहे हैं। और हज के कामों में से एक अहम काम शैतान को कंकरी भी मारेंगे। कंकरी मारना भी दरअसल हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यादगार है जो शैतान से इजहार–ए–नफ़रत के लिए निशानी के तौर पर बाकी रखी गई है। इस हुक्म का मंज़र हदीस की किताबों में जिक्र किया गया है।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु की रिवायत है, वो फरमाते हैं कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हुक्म–ए–इलाही को पूरा करने के लिए चल दिए तो शैतान जमरा–ए–उकबा के करीब सामने आया तो आपने उसे सात कंकरियाँ मारीं यहाँ तक कि वो भाग गया। फिर जमर–ए–वुस्ता के पास नज़र आया तो आपने दोबारा उसे सात कंकरियाँ मारीं यहाँ तक कि वो भाग गया। फिर तीसरे जमरे के पास सामने आया तो आपने तीसरी मर्तबा उसे सात कंकरियाँ मारीं यहाँ तक कि वो भाग गया। हज़रत इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि यह शैतान को कंकरी मारने की कार्रवाई दरअसल हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इत्तिबा में है।

(मुस्तदरक हाकिम)

गोया कंकरी मारना उम्मत –ए–इस्लामिया के लिए तमाम शैतानी ख्यालात, वसवसों और शैतानी आदतों व तौर–तरीक़ों के ख़िलाफ़ एक सामूहिक नफ़रत का प्रतीकात्मक प्रदर्शन है, जो

हर साल पाबंदी के साथ अंजाम दिया जाता है।

हज़रत इब्राहीम अलै0 मिल्ली और दीनी तौर पर हमारे रूहानी बाप हैं, और अब उनकी औलादों पर यह लाज़िम कर दिया गया है कि वे इस शैतानी टकराव का सामूहिक मुकाबला करें। इसलिए जमरात दरअसल शैतानी ताकतों की यादगार हैं। मिना में क़ायम इन सुतूनों में कुछ रखा हुआ नहीं है, बल्कि ये वही मुक़ामात हैं जहाँ इंसान के दुश्मन शैतान ने अल्लाह के दोस्त हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को गुमराह करने की कोशिश की थी।

यह वही यादगार है जिसे हर साल हाजी कंकरी मारकर यूँ जताते हैं कि वे शैतान के वसवसों को ठुकरा रहे हैं और अल्लाह की इताअत में मजबूती से क़ायम हैं। जमरात को कंकरी मारना सिर्फ कंकरी फेंकना नहीं है, बल्कि शैतान का मुकाबला करने के लिए अल्लाह के साथ अहद (वादा) को ताजा करना है। अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ जंग का ऐलान करना है। दिल को शैतानी वसवसों और शक से पाक करना है।

हक़ पर क़ायम रहने में हजरत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की पैरवी करना है। और यह पक्का इरादा करना है कि अब अपनी बाकी ज़िंदगी में भी नेकी पर डटे रहेंगे। हदीस में जिक्र किए गए इस वाक़िए की तशरीह करते हुए एक अरब आलिमे दीन, डॉक्टर महमूद बिन अहमद अद–दोसरी ने रमी–ए–जमरात की हिकमत बयान करते हुए लिखा है कि:–

(अ) रमी–ए–जमरात को कंकरी मारना अल्लाह की इताअत और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल करने का सच्चा इज़हार है।

(ब) जब भी हाजी जमरात को कंकरी मारता है, तो उसे हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का शैतान के वसवसों को ठुकराने वाला महान काम याद आता है। यह याद ईमान को मज़बूत करती है और दिल को सच्चाई पर क़ायम रखती है।

(स) जमरात को कंकरी मारकर शैतान पर गालिब आना, इंसानियत के सबसे बड़े दुश्मन के खिलाफ़ एक खुला रूहानी ऐलान है और उसके रास्ते पर चलने से साफ़ इंकार करना है।

(द) जमरात को कंकरी मारकर मुसलमान अपनी ख़्वाहिशात और फितनों का मुकाबला करने की तरबियत हासिल करता है और नेकी करने व गुनाह से बचने के इरादे को मजबूत करता है।

एक मुसलमान होने के नाते हम सब बखूबी जानते हैं कि शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। कुरआन करीम की आयतों और सही हदीसों में शैतान की दुश्मनी, उसकी चालें, उसके बहकाने के विभिन्न तरीके और इंसान को सीधे रास्ते (सिरात–ए–मुस्तक़ीम) से भटकाने की उसकी लगातार कोशिशों का तज़किरा मिलता है। सहीह हदीस के अनुसार जो व्यक्ति अल्लाह की रजा के लिए हज करता है और उसमें ना कोई बेहूदा बात करता है और ना ही कोई गुनाह करता है, तो वह हाजी ऐसे लौटता है जैसे उसकी माँ ने अभी उसे जन्म दिया हो। इसलिए जब हाजी गुनाहों से पाक–साफ होकर लौटता है, तो उसे चाहिए कि वह अपनी बाकी ज़िंदगी में शैतान की चालों और उसके बहकावे से बचे और अल्लाह की मर्जी और फ़रमाबरदारी को सामने रखे। रमी–जमरात का यही असली पैगाम है और यही उसकी हिकमत है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम सब मुसलमानों को, खास तौर पर हुज्जाज–ए–किराम को, शैतान के शर से महफूज रखे, अपने दीन पर इस्तिक़ामत अता फरमाए और अच्छा खातिमा नसीब करे।

आमीन या रब्बल आलमीन।

❖❖❖

माँ-बाप और बुज़ुर्गों के साथ सदव्यवहार

अनवर हुसैन

परिवार यानी दादा–दादी, माँ–बाप भाई–बहन बीवी–बच्चे या थोड़ा और इसे विस्तृत करें तो सास–ससुर, चचा–बाबा, मामा–मामी और उनकी औलादें वगैरह। दीनी तालीम में परिवार के बुजुर्गों ख़ासतौर से वालिदैन के साथ अच्छे एख़लाक़ के बारे में बार–बार ज़ोर दिया गया है। यहाँ तक कि कुरआन की सूरः 'बनी इस्राईल' में ख़ुदा ने इरशाद फरमाया कि "उसके सिवा किसी की बंदगी न करो और अपने माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। अगर उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उनकी किसी बात पर 'उफ' तक न कहो और न उन्हें झिड़को बल्कि उनसे तमीज़ और तहज़ीब के साथ बात–चीत करो और उन के आगे इज़्ज़त व एहतराम के साथ आज़िज़ी (नर्मी) का सर झुकाये रखो और उनके हक़ में दुआ करो। "हदीसों में भी वालिदैन की ख़िदमत का मर्तबा बहुत बुलंद रखा गया है। एक हदीस में वालिदैन की नाफ़रमानी को "गुनाहे कबीरा" बताया गया हैं। एक और हदीस में रसूल सल्ल0 ने बताया है कि नमाज़ के बाद वालिदैन का कहा मानना अल्लाह को सबसे ज़्यादा पसंद है।

यानी अल्लाह जानता है कि बुजुर्ग़ होने पर किसी शख़्स का जिस्म और दिमाग़ एक आम आदमी जैसा काम नहीं करता है और उनकी याददाश्त कमज़ोर पड़ना, थोड़ा चिड़चिड़ापन हावी हो जाना, हर मामले में टोकना या अपनी राय ज़ाहिर करना वग़ैरह उनमें बहुत सी बातें जिस्मानी बदलाव और लम्बे तजुर्बे की वजह से आनी शुरू हो जाती हैं। आम तौर पर लोग इसे समझ नहीं पाते। अगर डरते डरते माँ–बाप कोई एक ख़्वाहिश ज़ाहिर कर देते हैं या बच्चों की किसी ग़लत हरक़त के लिए टोक देते हैं तो उनकी बात को ऐसे लिया जाता है जैसे उन्होंने उनकी खुशियों में ख़लल डाल दिया हो, बेटा–बेटी तो इन बातों को कुछ बर्दाश्त भी कर लेते हैं लेकिन कई बच्चे और नासमझ बहुएं बिलकुल भूल जाती हैं कि सामने वाला एक बुजुर्ग है। अरे ये बूढ़े सब जानते, समझते हैं और ज़्यादातर बातें ये बर्दाश्त कर लेते हैं, सब्र करते हैं या नज़रअन्दाज़ कर देते हैं। इसलिए इनकी इज़्ज़त करो और खुद से ऐसा कोई मौका न दो कि तुम्हारी कोई बात उन्हें बुरी लग जायें और अगर वालिदैन कभी किसी बात पर गलत भी हों तो उसे नजऱअन्दाज़ कर सब्र से काम लो। याद रखो कि माँ बाप की नाराज़गी तुम्हारे घर से सुकून, खुशियाँ और बरकत छीन सकती है, वालिदैन की दुआ और बद्दुआ कभी खाली नहीं जाती।

घर में बुजुर्ग का होना एक बरकत की निशानी है। उनके साथ आधा घंटा बैठकर उनसे आज़िज़ी से बात करो, उनके हाथ–पैर–सर दबा देने, उनके कपड़े तह कर रखने से उनकी ख़ुशी का आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते। हज, उमरा, अस्पताल, बाजार/माल, पिकनिक, शादी –ब्याह के मौकों पर इन बुजुर्गों को साथ ले जाने से इनकी आँखों में चमक को ज़रा पढ़ने की कोशिश कीजिये आपको अन्दर से झकझोर देने वाला रूहानी सुकून मिलेगा। यही हाल उनको खाना पानी दवा देते वक़्त, सर पैर दबाते वक़्त अगर

शेष पृष्ठ ....31..पर

कुरबानी का महत्व इस्लाम की दृष्टि में

मुहम्मद इक़बाल नदवी

इस्लाम अपने इतिहास में एक ऐसी यादगार रखता है जिससे प्रेम व भाई चारे मानवता से मुहब्बत की खुशबू आती है उस यादगर को कुरबानी कहते हैं यह हज़रत इब्राहीम अलै0 की यादगार का वह महान प्रतीक है जिसे मुसलमान प्रत्येक वर्ष पूरे संसार में बड़े ही हर्ष और गर्व के साथ मनाते हैं। यह इस्लामी माह जिल्हिज्जा की दसवीं तारीख से शुरू होकर बारहवीं तारीख की अस्र के वक़्त तक मनाई जाती है।

कुरबानी की परिभाषा और उसकी असल रूह अरबी का वह शब्द है जिसका अर्थ होता है कि ऐसा कार्य करना जो बन्दे को ईश्वर के क़रीब और निकट करदे इसी संदर्भ में ईश्वर की आज्ञा नुसार मुस्लिम लोग उन जानवरों की कुरबानी करते हैं जिन का वर्णन इस्लामी ग्रन्थों में है। कुरबानी करना केवल जानवरों को जिब्हा करने का नाम नहीं है बल्कि अपने अन्दर की मोह माया को खत्म करना और खुदा के हुक्म के सामने बड़ी से बड़ी कीमती वस्तु को उसके मार्ग में कुरबान कर देना है।

कुरआन पाक में अल्लाह तआला फरमाते हैंः—

अल्लाह तक न उन जानवरों का गोश्त पहुंचता है और न ही उन का खून बल्कि उसके यहां तुम्हारा तक़्वा (परहेज़गारी) पहुंचती है।

(सूरहः अलहज—37)

इससे स्पष्ट हो जाता है कि कुरबानी का असली मक़सद दिल की सच्चाई और पवित्रता है। जो अल्लाह को बेहद पसंद है।

कुरबानी का संदर्भः—

इसकी जड़ें उस ऐतिहासिक महान कहानी से जुड़ी हैं जिसमें हज़रत इब्राहीम अलै0 को अल्लाह तआला ने उनके अपने बेटे इस्माईल अलै0 को खुदा के रास्ते में कुरबान कर देने का हुक्म दिया, विचार कीजिए एक पिता से उसकी संतान की आहुति माँगना कितनी बड़ी परीक्षा है, परन्तु अल्लाह का आदेश ही उनके लिए सर्वप्रथम था इसलिए पिता ने अपने नन्हे से पुत्र से इसके बारे में बात की कि मुझे सपने में दिखाया जा रहा है कि मैं तुम्हें अल्लाह के रास्ते में कुरबान कर रहा हूं सो तुम्हारी क्या राय है आज्ञा कारी पुत्र ने बिना किसी झिझक और विलम्बता के उत्तर दिया पिता श्री आप उस कार्य को तत्काल कर डालिये जिसका आदेश आपको ईश्वर की ओर से प्राप्त हुआ है, खुदा चाहेगा तो आप मुझे सब्र करने वालों में से पायेंगे। सोचिए ज़रा यह लम्हा मानवीय इतिहास का कितना भावुक और ठोस विश्वास व ईमान भरा हुआ होगा जब दोनों अल्लाह के आदेश के आगे नतमस्तक हो गये तथा बाप ने बेटे की गर्दन पर छुरी चला दी और इस तरह वह अपने इम्तिहान में सफल हुए, और अल्लाह ने इस्माईल अलै0 की जगह एक दुम्बा भेज दिया वह छुरी उसकी गर्दन पर चली और इस्माईल अलै0 को अल्लाह तआला ने सुरक्षित रखा फिर खुदा तआला ने इब्राहीम अलै0 से कहा कि तुमने अपने सपने को सच्चा कर दिखाया हम अपने नेक बन्दों को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं।

इस प्रकार कुरबानी हम को यह संदेश देती है कि हम ईश्वर की आज्ञा के आगे नतमस्तक रहें अपने हृदय तथा विचारों पर क़ाबू रखें गुनाह के मार्ग को त्याग दें सच्चाई और पवित्रता के रास्ते पर अपने जीवन को व्यतीत कर हर प्रकार की आने वाली समस्याओं पर अपना संतुलन बनाये रखें क्योंकि सांसारिक जीवन हमसे

कदम कदम पर कुरबानी की माँग करता है फिर बिना कठोर परिश्रम और त्याग के हम कैसे सफल हो सकते हैं जिस प्रकार हम कुरबानी के गोश्त को मिल कर आपस में बाँट कर खाते हैं गरीबों और ज़रूरतमन्दों के साथ भलाई का व्यवहार करना उनके सुख दुख में शामिल होना ज़माने के सताए हुए लोगों की क्षमता अनुसार मदद करना भी कुरबानी की तरह नेक काम है। क्योंकि एक मुसलमान की ज़िन्दगी, मौत तथा उसके समस्त नेक काम अल्लाह के लिए होते हैं जो समस्त ब्रह्माण्ड का पालनार है। उसके लिए हम सब का अपने जीवन की सबसे अहम से अहम वस्तु को कुरबान करने के लिए सदैव तैयार रहें सच्चाई के मार्ग पर चलने के लिए किसी भी बुराई से समझौता न करें क्योंकि बुरी आदतों को छोड़ना भी एक प्रकार की कुरबानी होती है।

कुरबानी हमसे क्या चाहती हैः–

अल्लाह के प्रति सदेव भक्ति और समर्पण की भावना को जगाए रखना हज़रत इब्राहीम अलै0 के इस महान बलिदान को जीवित रखना कठिन से कठिन परिस्थिति में भी धैर्य का दामन ना छोड़ना तथा हर समस्या और परेशानी में भी हम अपने आपको विचिलित न होने दें, तो आईये हम सब संकल्प लें कि खुदा तआला की नाफरमानी नहीं करेंगे, अपने अन्दर की आत्मा को उसकी भक्ति उपासना से पवित्र रखेंगे, और समाज में एक ऐसा जीवन व्यतीत करने की नज़ीर क़ायम करें जो आने वाली नस्लों के लिए एक उदाहरण बने।

कुरबानी से संबंधित मुख्य बातेंः–

1. जिस पर जक़ात फर्ज होती है उस पर कुरबानी भी ज़रूरी होती है।

2. कुरबानी जिल्हिज्जा की दस्वीं तारीख से शुरु होती है और बारहवीं तारीख के अस्र के वक़्त तक इसका समय निर्धारित है।

3. बकरा भेंड़ गाय, भैंस, ऊँट आदि जानवरों की कुरबानी होती है, भारती समाज में जहाँ जहाँ गाय की कुरबानी मना है वहां गाय की जगह भैंसे और पड़वे की कुरबानी करें, छोटा जानवर जैसे बकरा, बकरी एक साल के होना ज़रूरी है, अल्लाह का नाम लेकर जानवर की मर्दन पर छुरी चलाना ज़रूरी है।

4. जानवर के गोश्त को बेहतर है कि तीन भागों में बाँट लें, अपने लिए, अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए, और एक भाग गरीबों के लिए, इससे समाज में समानता और बराबरी की भावना उत्पन्न होती है। ईद की खुशियाँ खुद भी मनायें और सारे मुस्लिम भाइयों के साथ अपनी अपनी खुशियों को बाँटें तथा एक प्रगतिशील जीवन की बुनियाद डालें।

❖❖❖

पृष्ठ .....22... का शेष

''मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी और मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है।''

(सूरः अनआम–162)

यानी कि हमारे पैदा होने से लेकर हमारी ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हे तक हम जो भी अमल अंजाम दें चाहे वह कोई भी अमल हो वह सब का सब अल्लाह के लिए और उसके रसूल के बताए हुए तरीक़े पर ही हो, सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा और उसकी ख़ुश्नूदी के लिए ही हो तभी हम कुर्बानी का असल मक़सद समझने वाले और ख़ुदा के इस अज़ीम तोहफ़े पर शुक्र अदा करने वाले बन्दों में शुमार होंगे। अल्लाह तआ़ला हम सब को कुर्बानी के मक़सद को समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आमीन।

❖❖❖

बदलता लखनऊ

शारिक़ अलवी

चार साल की उम्र में 1939 ई० में मेरा घर से करीब एक अमरीकी मिशनरी स्कूल में एडमीशन करा दिया गया इस तरह घर से निकल कर बाहर की दुनिया को पहली बार देखने का अवसर प्राप्त हुआ, मध्य लखनऊ में मेरे मुहल्ले और आस पास कहीं बिजली उपलब्ध नहीं थी, घरों में मिट्टी के तेल की लालटेनें जलती थीं पानी के नल भी केवल मध्यवर्गीय घरानों में थे, कुछ घरों में कुवें थे जिनसे पानी निकाला जाता था, मिनुस्पलटी की ओर से जगह–जगह मिट्टी के तेल से जलने वाले लैम्प लगे थे जिनको शाम को एक कर्मचारी आकर जला देता था और सवेरे आकर बुझा देता था, चूंकि द्वितीय महा युद्ध (1939–45) शुरु हो गया था हर तरफ डर और ख़ौफ का माहौल था आशंका थी कि कहीं जापानी फौजें लखनऊ पर भी बम्बारी न कर दें, ज़्यादातर पार्कों में हवाई हमलों से बचने के लिए खनदके खोदी गई थीं और सामान्य रूप से हवाई हमलों से बचने के लिए विभिन्न उपायों से जनता को सावधान किया जाता था।

प्राइमरी स्कूल जाते हुए पाँच साल बीत गये और अब मुझमें माहौल को देखने और समझने की योग्यता पैदा हो गई थी, घर के बुजुर्गों के साथ– शहर के बाजारों और विभिन्न– मुहल्लों में रहने वाले रिश्तेदारों के यहां जाने का मौका भी मिलता था, इस तरह सूरते हाल का ज़ायजा लेता रहता था।

उस ज़माने का लखनऊ गोमती नदी के किनारे आबाद था और तीन भागों में बँटा हुआ था, पूरब की ओर हजरतगंज और फौजी छावनी तक, बीच में क़ैसर बाग और उसके आसपास के मुहल्ले और पच्छिम की ओर चौक का क्षेत्र था जिसमें नक्ख़ास और फिरंगी महल आदि आते हैं, गोमती नदी पर शहर को जोड़ने के लिए चार पुल थे, बल्कि अब भी हैं, शाही पुल जो सीतापुर से आने वाली सड़क से मिला हुआ है, फिर डालीगंज का पुल जो पहले लोहे का पुल कहलाता था, मोती महल का पुल जिसकी तरफ आबादी बढ़ना शुरु हो गई थी और 1920 ई0 में लखनऊ यूनिवर्सिटी, आई0टी0 कालेज, कालविन तअल्लुके दार कालेज आदि वजूद में आ गये थे, चौथा पुल निशातगंज के पुल के नाम से मशहूर है।

आईये पहले गोमती के उस पार के लखनऊ का जाइजा लेलें और बाद में गोमती पार के इलाके पर नजर डालेंगे। हजरतगंज का बाज़ार और इलाका मोती महल के पुल से लेकर गवर्नर हाउस और उसके आगे फौजी छावनी तक जाता है, चौड़ी साफ सुथरी सड़क जिस पर शुरु में तो कुछ निवास स्थान हैं जैसे डी0एम0 का बंगला, जहाँगीराबाद पैलेस आदि, परन्तु एक ओर बरामदे में दुकानें हैं जिनके आगे विशाल बरामदा है जिसको ''लवलेन'' भी कहते हैं। जहाँ ज़्यादातर अंग्रेज और एंग्लो इन्डियन ही नज़र आते थे हिन्दुस्तानी बहुत कम, इस बाज़ार में नज़र आते थे, शाम को अंग्रेज़ और अमरीकन फौजी अधिकारी और स्टाफ के लोगों से हज़रतगंज

का बाजार गुलज़ार रहता था। दुकानदार तो हिन्दुस्तानी होते थे लेकिन खरीदार सब बाहरी होते थे, बरामदे में जवान लड़के और लड़कियां अटखेलियां करती नज़र आती थीं जिसकी वजह से ये ''लवलेन'' कहलाता था। हजरतगंज के आस पास के इलाके लाल बाग, नरही आदि में कुछ हिन्दुस्तानियों की दुकाने थीं जिनसे उनके करीब मुहल्लों में रहने वाले अपनी ज़िन्दगी की आवश्यकताएं पूरी करते रहते थे, हजरतगंज का इलाक़ा सामूहिक तौर पर मालदार और रईस लोगों के लिए सुरक्षित था, लेकिन अब स्वतंत्रता के बाद से यहां हिन्दुस्तानियों की चहल पहल बढ़ गई है, छोटी बड़ी दुकानें और रेस्टोरेंट खुल गये हैं जहां हर समय रौनक बनी रहती है।

क़ैसर बाग का इलाक़ा जिसमें अमीनाबाद का मशहूर बाज़ार, लाटूश रोड, नज़ीराबाद आदि आते हैं हमेशा से बहुत व्यस्त इलाका रहा है। पहले अमीनाबद में दो बड़े पार्क हुआ करते थे एक घण्टा घर वाला पार्क और दूसरा अमीनुद्दौला पार्क, शाम को अमीनाबाद में बडी रौनक रहती थी, घण्टा घर वाले पार्क की एक ओर छोटी दुकानें थी जहां तरह–तरह की चीज़ें बिकती थीं, कोने में अब्दुल्लाह चाय वाले की दुकान थी जहाँ उर्दू के शाएर और अदीब शाम को एकट्ठा होकर बहस मुबाहिसा (वादविवाद) करते थे। अमीनुद्दौला पार्क उस समय लखनऊ का सबसे बड़ा पार्क था जिसमें हर साल नुमाइश लगती थी, और एलेक्शन के ज़माने में जलसे होते थे, जवाहर लाल नेहरू अक्सर एलेक्शन के अवसर पर इसी पार्क में भाषण देते थे। स्वतंत्रता के बाद शरणार्थियों के आने पर घण्टा घर वाला पार्क छोटी–छोटी दुकानों में परिवर्तित हो गया, इस प्रकार अमीनाबाद की पुरानी रौनक समाप्त हो गई। स्वतंत्रता के बाद अमीनाबाद से संबंधित क्षेत्रों में पानी और बिजली के उचित प्रबंध के बाद अब लोग आराम से रह रहे हैं।

चौक का ऐरिया पुराना लखनऊ कहलाता है, यहां के रहने वालों में अभी पुरानी और बापदादा की विशेषताएं पूर्णरूप से मौजूद हैं, इसकी एक वजह तो ये है कि इस इलाक़े में आज़ादी के बाद बाहरी लोग नहीं आये, इस तरह पुराने माहौल में ज़्यादा परिवर्तन नहीं हुआ, इस ऐरिये में झवाई टोले के हकीमों के खानदान और फिरंगी महल के उलमा और कुर्ब जवार में शिया हज़रात के नामवर खानदानों की रहाइश इस इलाके की नामवरी का सबब हैं, कुछ घर ही की वजह से चौथे और पांचवीं दहाई में ये इलाका शिया, सुन्नी फिरकों के बीच झगड़ों की वजह से बदनाम हो गया था लेकिन मरहूम मौलाना कलबे सादिक साहब की कोशिशें और एकता और भाईचारे के पैग़ाम की वजह से अब शांति का माहौल है।

1950 ई0 के बाद गोमती के पार का इलाका आबाद होने लगा और निराला नगर, महा नगर, वगैरा तेजी से आबाद हो गये, 1970 ई0 के बाद उजरयाँव गाँव भी गोमती नगर के नाम से तेजी से आबाद हो गया और इस तरह लखनऊ काफी विशाल इलाके में फैल गया।

(लेखकः नदवतुल उलमा से प्रकाशित होने वाली अंग्रेज़ी पत्रिका *"The Fragrance of East"* के प्रधान संपादक हैं)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: एक व्यक्ति कर्जदार है, कुछ दोस्त अहबाब हज करने जा रहे हैं इनका भी हज का इरादा हो रहा है अगर यह कर्ज अदा करे तो हज पर जाने के लिए जरूरत के मुताबिक माल नहीं बचता ऐसी सूरत में यह व्यक्ति क्या करे?

उत्तर: ऐसे व्यक्ति के लिए पहले कर्ज़ों की अदायगी की फिक्र करना जरूरी है क्योंकि कर्ज बन्दों के हूकूक में से है और हज अल्लाह के हुकूक में से है इसलिए बन्दों के हुकूक़ पहले अदा करे फिर हज का सफ़र करे।

प्रश्न: एक व्यक्ति कर्ज़दार है, लेकिन कुछ दोस्त अहबाब अपने खर्चे पर अपने साथ ले जाना चाहते हैं क्या यह व्यक्ति दोस्तों के खर्चे पर हज कर सकता है? क्या इस तरह हज करने से उसका फर्ज हज अदा हो जाएगा?

उत्तर: अगर कोई कर्ज़दार हो और वास्तव में उसके दोस्त अहबाब उसको अपने खर्च पर हज कराने ले जाएं तो उसे हज कर लेना चाहिए और इस तरह उसका हज अदा हो जाएगा और हज की फरजियत खत्म हो जायेगी।

प्रश्न: एक औरत के पास इतनी रकम है कि वह हज कर ले, उसके माँ–बाप हज पर जा रहे हैं उसकी ख्वाहिश है कि वह इनके साथ हज कर ले लेकिन शौहर का कहना है कि जब हमारा इंतेजाम हो जायेगा तो साथ हज करेंगे, यह औरत परेशान है कि क्या करे?

उत्तर: औरत के पास हज के खर्च भर माल है इसलिए उस पर हज फर्ज हो चुका है और वालदैन भी साथ हैं इसलिए शौहर को खुशदिली से इजाजत दे देना चाहिए अगर शौहर के पास हज का ख़र्च जमा न हुआ तो वह तो गुनहगार न होगा लेकिन औरत गुनहगार होगी इसलिए उसे खुशदिली से हज की इज़ाज़त देना चाहिए।

(बदा–ए–व सनाएः 124/2)

प्रश्न: एक साहब हज कर चुके हैं, अब दोबारा हज के लिए जाना चाहते हैं, जब कि उनके वालदैन ने हज नहीं किया है प्रश्न यह है कि वह खुद हज करें या वालदैन को हज कराएं?

उत्तर: अगर उनके वालदैन पर हज फर्ज न हो तो खुद हज पर जा सकते हैं और अगर वालदैन पर हज फर्ज था किसी कोताही से हज न कर सके और अब माली हैसियल न रही तो अपने नफली हज के बजाए वालदैन को हज पर भेजें ताकि उनको गुनाह से बचाया जा सके।

(किताबुल फतावा 212/8)

प्रश्न: एक व्यक्ति किराये के मकान में रहता है और उसके पास हज करने भर रकम मौजूद है, इत्तेफाक से उसी मुहल्ले में एक मकान बिक रहा है क्या यह व्यक्ति हज करे या निजी मकान खरीद ले?

उत्तर: सफरे हज की कार्यवाईयों और तारीखों से पहले अगर मकान उसने खरीद लिया और इतनी रकम नहीं बची की हज कर सके तो उस पर अभी हज फर्ज नहीं हुआ, इसलिए फिलहाल हज पर जाना ज़रूरी नहीं, और अगर अभी मकान नहीं खरीदा है और हज की तारीख़ें आ गयीं तो पहले हज करे।

(अल दुरुल मुखतार 461/2)

प्रश्न: हज किन लोगों पर फर्ज है?

उत्तर: हज हर ऐसे मुसलमान पर फर्ज है जो आज़ाद, आक़िल, बालिग़ और स्वस्थ्य हो, और उसके पास बुनियादी ज़रूरतों के अलावा इतना माल हो कि उसकी हालत और हैसियत के मुताबिक खान–ए– काबा आने जाने के खर्च और खाने पीने के लिए काफी हो, इसके अलावा जिनके खर्च का ज़िम्मा उसके ऊपर अनिवार्य हो उनको दिया जा सके, और रास्ते में कोई डर न हो, और औरत के लिए साथ में महरम हो।

(फत्हुल क़दीर– 2/410)

प्रश्न: जिस साल हज फर्ज हो तो क्या उसी साल हज के लिए जाना ज़रूरी है या लेट की भी गुंजाइश है?

उत्तर: हज जिस साल फर्ज हो, जितनी जल्दी मुम्मकिन हो उसी साल हज कर ले, बिना किसी अहम सबब के लेट करने से गुनाह होगा, हाँ अगर बाद में भी हज कर लिया जाय तो गुनाह माफ हो जायेगा। (जुजाजतुल मसाबीह 2/29)

प्रश्न: अगर किसी पर ह़ज फर्ज हो जाए, उसके बावजूद बिला किसी उज्र के हज न करे तो ऐसे व्यक्ति के बारे में शरीअ़त क्या कहती है?

उत्तर: संसाधन होने और कोई रुकावट न होने के बावजूद हज न करने वालों के बारे में हदीस शरीफ में सख़्त डराने वाली बातें आई हैं और उनके ईमान की हालत में मौत पर अंदेशा जाहिर फरमाया गया है, आप सल्ल0 ने ऐसे लोगों को यहूद व नसारा से तशबीह दी है।

(जुजाजतुल मसाबीह 2/95)

❖❖❖

पृष्ठ .....25... का शेष

आपकी ज़बान में ज़रा सा लोच और प्यार है तो जानिए आपने उनका दिल ही नहीं जीत लिया बल्कि उनकी ढेर सारी दुआओं ने आपको लबरेज़ कर दिया।

और हाँ शादी–ब्याह, बीमारी या और भी मामलों में इनकी राय ज़रूर लें इससे इन्हें बहुत खुशी होगी और शायद उनके तजुर्बे से आपको उनकी कोई राय अच्छी लग जाये। बुजुर्गों के साथ अच्छे सुलूक से आपका खानदान और समाज में जो नाम होगा उसका भले ही कोई जाहिरी फ़ायदा नज़र न आता हो मगर समाज में आपके एक 'नेक और शरीफ़ इंसान' की पहचान के फायदे अनमोल है, जिसका असर महफिलों में आपकी इज़्ज़त, बच्चों के लिए रिश्ते और आपको जेहनी सुकून पहुँचाने वाले न जाने कितने मौक़ों पर आपके सामने आयेंगे और सबसे बड़ी बात अल्लाह आपको इस दुनिया में और आख़िरत में इसका अज्र (बदला) ज़रूर देगा। एक बात और कि अगर इन बुजुर्गों को बुढ़ापे में भी दिल बहलाने के लिए दीनी नातों, किताबों वगैरह का शौक़ है तो इसे ज़रूर पूरा करने की कोशिश कीजिये इन सबसे उन्हें और आपको बेहद जेहनी सुकून मिलेगा और उनकी सेहत अच्छी रहेगी। आप अपने आस–पास ऐसे बहुत से घर देख सकते हैं, जहाँ माँ–बाप का सही ख़याल न रखने की वजह से उनके सामने दुनिया में ही कैसी कैसी परेशानियाँ आई हैं। कहने को तो बहुत कुछ है मगर आप बस इतना समझिये कि जिसने अपने वालिदैन और बुजुर्गों का खयाल रख लिया समझो दुनिया में शोहरत और तरक्की उसका पीछा करेगी और जन्नत तो माँ के पैरों तले है ही।

अल्लाह हम सब को अपने वालिदैन और बुजुर्गों की इज़्ज़त करने, उनके साथ अच्छा सुलूक करने और उनके हक़ में दुआ करने की तौफीक अता करे।

आमीन।

❖❖❖

हज और हमारा समाज

नौशाद खान नदवी

हज क्या है?

हज दरअसल उस इबादत का नाम है, जो पूरी तरह अल्लाह के लिए अदा की जाती है। यह महज एक शारीरिक यात्रा नहीं, बल्कि आत्मा की गहराइयों में उतर जाने वाला एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक सफ़र है, एक ऐसा सफ़र, जिसमें इंसान अपनी बाहरी पहचान से ऊपर उठकर अपने पालनहार की उपस्थिति में स्वयं को समर्पित कर देता है।

हज के दौरान जब हाजी "लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक" की पुकार लगाता है, तो यह केवल शब्द नहीं होते, बल्कि एकेश्वरवाद (तौहीद) का जीवंत उद्घोष और हर प्रकार के शिर्क से दूरी का स्पष्ट ऐलान होते हैं।

एहराम की सादगी में लिपटा हुआ मनुष्य, संसार की सारी कृत्रिम दीवारों, रंग, जाति, अमीरी–गरीबी और ऊँच–नीच को गिराकर एक ही पंक्ति में खड़ा हो जाता है। सब एक समय, एक स्थान पर, एक ही ईश्वर के सामने सिर झुकाते हैं, जहाँ न कोई बड़ा होता है, न छोटा, केवल एक बंदा और उसका रब होता है।

खाना–ए–काबा की ज़ियारत, अरफात के मैदान में ठहरना, और कुर्बानी का दृश्य, ये सब हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की उस महान परंपरा को जीवित करते हैं, जो अल्लाह के समक्ष पूर्ण समर्पण और आज्ञाकारिता की मिसाल है।

सफा और मरवा के बीच की सईः–

हज़रत हाज़रा की बेचैनी, धैर्य और अटूट विश्वास की कथा को दोहराती है, एक माँ की वह तड़प, जो अंततः ईश्वर की कृपा को आकर्षित कर लेती है।

और जब हाजी शैतान को कंकरी मारता है, तो वास्तव में वह अपने भीतर छिपे हर बुरे विचार और हर स्वार्थपूर्ण इच्छा को ठुकराने का संकल्प करता है।

हज बंदगी की पराकाष्ठा (इंतहा) है, वह मुकाम, जहाँ इंसान अपनी "मैं" को मिटा कर "वह" में खो जाता है। इसका वास्तविक उद्देश्य यही है कि मनुष्य अपनी सम्पूर्ण कामनाओं, अपेक्षाओं ख्वाहिशात उम्मीदों को ईश्वर के हवाले कर दे और लौटते समय एक नए संकल्प के साथ अपने जीवन की दिशा बदल दे। और उसी अनुशासन के साथ जीवन व्यतीत करे, किन्तु अफ़सोस, इतनी महान इबादत भी एक स्लो पाइजन के प्रभाव में आ जाती है और वह है "छिपा हुआ शिर्क" जो मनुष्य के हृदय में चुपचाप घर कर लेता है और समय–समय पर अपना प्रभाव दिखाता रहता है।

जब इबादत में दिखावा शामिल हो जाए, जब नाम और प्रतिष्ठा की चाह जाग उठे, जब "हाजी" कहलाने की आकांक्षा मन में स्थान बना ले, तो समझ लेना चाहिए कि निष्कपटता, इख़लास की ज्योति मांद पड़ रही है।

मनुष्य भले ही इसे शब्दों में व्यक्त न करे, परन्तु उसका व्यवहार, उसका बदलता हुआ आचरण, इस आंतरिक स्थिति को प्रकट कर देता है। निस्संदेह, मन ही वह तत्व है, जो मनुष्य को बुराई की ओर ले जाने में सबसे अधिक प्रभावी होता है।

रस्म–व–रिवाजः–

हज और उमरा के इस पवित्र सफ़र के साथ कुछ ऐसे सामाजिक रिवाज भी जुड़ते जा रहे हैं, जो धीरे–धीरे अपनी वास्तविक सीमा से आगे बढ़कर एक अनिवार्य प्रथा का रूप लेते जा रहे हैं।

प्रस्थान से पहले और वापसी के बाद दावतों का आयोजन, स्वागत की तैयारियाँ,

उपहारों का आदान–प्रदान, दुआ की प्रार्थनाएँ, क्षमा–याचना का सिलसिला ये सब अपने आप में मानवीय भावनाओं और आपसी प्रेम का प्रतीक हैं।

किन्तु जब यही कार्य औपचारिकता और बाध्यता का रूप ले लेते हैं, तो वे इस आध्यात्मिक यात्रा की आत्मा के विपरीत हो जाते हैं।

दावत, यदि सादगी के साथ हो, तो प्रेम का सुंदर माध्यम है, किन्तु जब उसमें दिखावा और आडंबर शामिल हो जाए, तो वह बोझ बन जाती है।

उपहार देना और लेना संबंधों को मज़बूत बनाने का साधन है, परन्तु यदि इसके लिए व्यक्ति को सूद ब्याज लेना पड़े या अपनी क्षमता से अधिक खर्च करना पड़े, तो यह उचित नहीं।

हाजी से मिलना और उससे हाथ मिलाना एक स्नेहपूर्ण व्यवहार है, किन्तु इसमें भी सहजता और सुविधा का ध्यान रखना चाहिए।

और वापसी पर जो भव्य स्वागत, मंच, फूलों की वर्षा, मालाएँ और बड़े–बड़े आयोजन किए जाते हैं, वे शरीअत से सिद्ध नहीं हैं, बल्कि एक विकसित होती सामाजिक परंपरा हैं, जिनसे बचना ही बेहतर है।

दुआ का महत्वः–

हाँ, एक कार्य ऐसा है जो न केवल उचित है, बल्कि अत्यंत श्रेष्ठ भी है, और वह है हाजी से दुआ की प्रार्थना करना।

हदीस में है कि हाजी अपने गुनाहों से ऐसे पवित्र होकर लौटता है जैसे एक नवजात शिशु।

इसलिए उसकी दुआ में विशेष स्वीकार्यता की आशा होती है, और उससे दुआ की प्रार्थना करना एक उत्तम आचरण है।

निष्कर्षः–

संक्षेप में, हज ईश्वर की आज्ञापालन, और एकेश्वरवाद के स्वीकार करने का नाम है।

यह मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप से परिचित कराता है, उसके भीतर के अहंकार को समाप्त करता है और उसे एक ऐसे समुदाय का हिस्सा बनाता है, जो एकता, समानता और त्याग का संदेश देता है।

यह यात्रा बाहरी से अधिक आंतरिक है जहाँ मनुष्य अपने मन पर विजय प्राप्त करता है और ईश्वर के आदेश के सामने झुकना सीखता है।

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

कुरबानी के मसायल

फिक़्ह की मोतबर किताबों से

इदारा

कुर्बानी का बड़ा सवाब है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी से ज़्यादा कोई चीज़ अल्लाह को पसन्द नहीं कुर्बानी करते वक्त खून का जो कत्रा ज़मीन पर गिरता है तो ज़मीन तक पहुंचने से पहले ही अल्लाह तआला के पास मक्बूल हो जाता है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि कुर्बानी के जानवर के बदन पर जितने बाल होते हैं, हर हर बाल के बदले में एक नेकी लिखी जाती है। बड़ी दीनदारी की बात तो यह है कि अगर किसी पर कुर्बानी करना वाजिब भी न हो तब भी इतने बे हिसाब सवाब के लालच से कुर्बानी कर देना चाहिए। अगर अल्लाह ने माल दिया हो तो चाहिए कि जहां अपनी तरफ से कुर्बानी करे अपने वफात पाए हुए रिश्तेदारों की तरफ से भी कुर्बानी कर दे जैसे माँ बाप वगैरह। अगर यह न हो सके तो माल वाला अपनी तरफ से कुर्बानी ज़रूर करे कि उन पर वाजिब है।

० मुसाफिर पर कुर्बानी वाजिब नहीं।

० बकर ईद की दस्वीं तारीख से लेकर बारहवीं तारीख की शाम तक कुर्बानी करने का वक्त है।

० अपनी कुर्बानी को अपने हाथ से ज़ब्ह करना बेहतर है और खुद जब्ह करना न जानता हो तो किसी और से ज़ब्ह करवा दे।

० कुर्बानी करते वक्त जबान से नीयत पढ़ना और दुआ पढ़ना ज़रूरी नहीं है अगर दिल में ख़्याल कर लिया कि मैं कुर्बानी करता हूं और जबान से कुछ नहीं पढ़ा सिर्फ बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह के ज़ब्ह कर दिया तो कुर्बानी दुरुस्त हो गई। अगर याद हो तो कुर्बानी की दुआ पढ़ लेना बेहतर है। (अरबी दुआ यहाँ नहीं लिखी जा रही है)

० मालदार पर कुर्बानी सिर्फ अपनी तरफ से करना वाजिब है औलाद की तरफ से वाजिब नहीं है।

० बकरी, बकरा, भेड, दुम्बा, भैंस, भैंसा, ऊँट, ऊँटनी, इतने जानवरों की कुर्बानी दुरुस्त है। झगड़े फसाद से बचने के लिए यहाँ गाय की कुर्बानी न करना चाहिए।

० भैंस, भैंसा, ऊँट में अगर सात आदमी शरीक हो कर कुर्बानी करें तो भी दुरुस्त है लेकिन शर्त यह है कि किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो और सबकी नीयत कुर्बानी या अकीका करने की हो।

० अगर बड़े जानवर में सात आदमी से कम लोग शरीक हुए तब भी कुर्बानी दुरुस्त होगी मगर किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो, अगर कोई शख़्स बड़ा जानवर (भैंस वगैरह) अकेले कुर्बानी करना चाहे तब भी कुर्बानी दुरुस्त होगी।

० बकरी, बकरा साल भर से कम की कुर्बानी के लिए दुरुस्त नहीं। भैंस, भैंसा दो साल से कम उम्र के कुर्बानी के लिए दुरुस्त नहीं और ऊँट की उम्र कुर्बानी के लिए कम से कम पांच साल है, लेकिन 6 माह का दुंबा या भेड़ अगर इतना मोटा ताजा हो कि साल भर का

मालूम होता हो तो उसकी भी कुर्बानी दुरुस्त है वरना उसे भी साल भर का होना ज़रूरी है। बेहतर यही है कि 6 माह की भेंड़ी की कुर्बानी न करे चाहे वह खूब मोटी ताज़ी हो।

० जो जानवर अन्धा हो या एक आंख का हो या एक कान तिहाई या तिहाई से ज़्यादा कट गया हो। तिहाई दुम या तिहाई से ज़्यादा कट गई तो उस जानवर की कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

० जो जानवर इतना लंगड़ा हो कि सिर्फ तीन पैरों से चलता है उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

० जिस जानवर के बिल्कुल दांत न हों उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं। अगर आधे से ज़्यादा दांत गिर गये हों तो उसकी भी कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

० जिस जानवर के पैदाइश ही से कान नहीं हैं उसकी कुर्बान दुरुस्त नहीं।

० जिस जानवर की सींग पैदाइशी नहीं है, सींग थी मगर जड़ से टूट गई तो उसकी कुर्बानी न होगी। लेकिन अगर जड़ से सिर्फ खोल निकल गया है गूदा आधे से ज़्यादा बाकी हो तो कुर्बानी दुरुस्त होगी। चाहे दोनों सींगों में हो या एक में।

० खस्सी यानी बध्या बकरे, मेंढ वगैरह की कुर्बानी दुरुस्त है।

० कुर्बानी का गोश्त आप खाएं और अपने रिश्तेदारों को दें और फकीरों मुहताजों को खैरात करें और बेहतर यह है कि कम से कम तिहाई हिस्सा गरीबों को दें लेकिन अगर थोड़ा गोश्त गरीबों को दिया तो भी कोई गुनाह नहीं है।

० कुर्बानी की खाल को यूं ही खैरात कर दे या बेच कर उसकी कीमत खैरात करदे। वह कीमत ऐसे लोगों को दे जो जकात के मुस्तहिक़ हों।

० कुर्बानी की खाल की कीमत मस्जिद के काम में या किसी और नेक काम में लगाना दुरुस्त नहीं वह गरीबों का ही हक़ है।

० कसाई को उसकी मज़दूरी में कुर्बानी का कोई भी हिस्सा न दे बल्कि मज़दूरी अपने पास से दे।

० किसी पर कुर्बानी वाजिब थी मगर कुर्बानी के दिन गुज़र गये वह कुर्बानी न कर सका तो अब वह एक बकरी या भेड़ की कीमत खैरात करे। और अगर बकरी खरीद ली थी मगर कुर्बानी न कर सका तो वही बकरी खैरात करे।

० जिसने नज़्र (मन्नत) मानी कि मेरा फुलां काम हो जाए तो मैं कुर्बानी करूँगा तो काम हो जाने पर उस पर कुर्बानी करना वाजिब है। और इस कुर्बानी का पूरा का पूरा गोश्त खैरात करना वाजिब होगा।

० अगर किसी वफात पाए हुए शख़्स को सवाब पहुंचाने के लिए उसके नाम से कुर्बानी करे तो उस कुर्बानी का गोश्त भी अपनी कुर्बानी की तरह खाना खिलाना दुरुस्त है।

० अगर कोई शख़्स यहां मौजूद नहीं है उसके हुक्म के बिना अगर कुर्बानी कर दी गई तो यह कुर्बानी सही न होगी। और उसके हुक्म के बिना अगर उसकी तरफ से किसी बड़े जानवर में हिस्सा लगा कर कुर्बानी की गई तो किसी की भी कुर्बानी सही न होगी।

० कुर्बानी की खाल कसाई को उजरत में देना या किसी को भी उजरत में देना जाइज़ नहीं।

० कुर्बानी का गोश्त गैर मुस्लिम को भी दिया जा सकता है अलबत्ता उजरत में न दिया जाए।

❖❖❖

मदीना मुनव्वरा का सफ़र

इदारा

नबी करीम सल्ल0 का इर्शाद है कि जिसने भी मेरी मस्जिद (मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) में 40 वक्त की नमाजें बा जमात अदा कीं और कोई नमाज़ कज़ा न की, तो वह निफ़ाक़ और जहन्नम के अ़ज़ाब से निजात पाएगा।

मस्जिदे नबवी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) में 40 वक्त बा जमात नमाज़ पढ़ने की इतनी बड़ी फ़ज़ीलत है इसलिए आपका मदीना का क़याम कम से कम 8 दिन का होगा। ताकि 8 दिन आप पाँचों वक़्त की नमाज़ बाजमआत अदा कर सकें।

अगर आप की फ्लाईट हज के अय्याम से बहुत पहले है, तो पहले आप मदीना मुनव्वरा जाएंगे। फिर वहाँ 40 वक़्त की नमाज़ पढ़कर मक्का मुकर्रमा का सफ़र करेंगे।

अगर मक्का मुकर्रमा से पहले मदीना मुनव्वरा का क़याम हो तो, सफ़र से पहले ऐहराम पहनने की ज़रूरत नहीं होगी। मदीना मुनव्वरा के क़याम के बाद में आप मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा के लिए सफ़र करेंगें तब आपको एहराम पहनना होगा।

मदिना मुनव्वरा में रिहाईश के लिए सबके दर्जे एक जैसे हैं मक्का मुकर्रमा की तरह पहला, दूसरा और तीसरा दर्जा नहीं है।

मक्का मुकर्रमा कि बनिस्बत मदीना मुनव्वरा *Systematic* और पुरसुकून शहर है। शहरी, शरीफ़ और ईमानदार हैं। अगर आप हस्सास तबीयत के मालिक हैं तो मदीना मुनव्वरा में आप को हमेशा रहमत व सकीनत का एहसास होगा।

मदीना मुनव्वरा भी मक्का मुकर्रमा की तरह हरम शरीफ़ है। यहाँ पर भी जानवरों का मारना, ड़राना, झाड़ियों को या घास तोड़ना, झगड़ा करना, रास्ते पर पड़ी चीज़े उठाना वगैरा हराम है।

हदीस शरीफ़ के मुताबिक दुनिया में सिर्फ तीन मुक़ामात की ज़ियारत के लिए सफर किया जा सकता है।

1. मस्जिदे हराम (मक्का मुकर्रमा), 2. मस्जिदे नबवी (सल्ल0), 3. मस्जिदे अक़्सा।

तो जब आप सफ़र करें तो नीयत मस्जिदे नबवी (सल्ल0) में नमाज़ पढ़ने की करें।

एक हदीस के मुताबिक मस्जिदे नबवी की एक नमाज़ का सवाब दूसरी मस्जिदों से पचास हज़ार गुना ज़्यादा है।

हाज़िरी के आदाबः—

अल्लाह तआला का कुरआन शरीफ में हुक्म है कि ''ऐ ईमान वालों! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से बुलंद न करो और न नबी (सल्ल0) के साथ ऊँची आवाज़ से बात किया करो, जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे से करते हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे नेक आमाल सब बर्बाद हो जाएं और तुमको ख़बर भी न हो।''

(सुरः अल हुजरात—2)

मस्जिदे नबवी की हाज़िरी किसी भी शहनशाह के दरबार में हाज़िरी से बढ़कर है। एक बादशाह के दरबार में बे अदबी से सिर्फ़ जान का ख़तरा रहता है। और नबी (सल्ल0) के दरबार में बे अदबी से आख़िरत की बरबादी का खतरा रहता है। इसलिए वह लोग जो नबी (सल्ल0) की अजमत को समझते थे, उन्होंने नबी (सल्ल0) की ताज़ीम की वह मिसाल क़ायम की है कि तारीख में और कहीं ऐसी मिसालें नहीं मिलतीं। इनकी ताजीम की चंद मिसाले नीचे दी गई हैं।

शेष पृष्ठ ....39..पर

पिछले अंक से आगे

कारख़ाने का चक्कर

मायल ख़ैराबादी

काम बाग़:—

सलाम करके शेख साहब ने अमानतुल्लाह से अपना बक्स ले लिया, एक रास्ते की तरफ़ इशारा किया कि इधर चले जाओ, सामने ''काम बाग'' मिलेगा। शेख़ साहब का इशारा पाते ही अमानतुल्लाह उस रास्ते पर हो लिया। थोड़ी ही दूर था कि ''काम बाग'' के वृक्ष उसे दिखाई देने लगे। उसने देखा कि बहुत हरा भरा, लहलहाता और फलदार बाग है, इस तरह के रंग वाले और रसीले फल लदे खड़े हैं अमानतुल्लाह उस बाग के अन्दर गया। बहुत से लोग उसमें काम कर रहे थे, उनसे बागवान का पता पूछा और उनसे जाकर मिला। उस वक़्त बागवान साहब एक ताजा कलम बांध रहे थे। अमानतुल्लाह ने जाकर सलाम किया तो उसकी तरफ देखा, फिर खुद ही कहने लगे, ''शायद आप हकीम साहब से मिलना चाहते हैं! अच्छा, अच्छा, जरा मैं यह कलम बांध लूँ, नहीं तो खराब हो जायेगी। अभी अभी ताजा तराश कर लाया हूँ, इतनी देर में आप ऐसा करें कि जरा वह कुदाल उठा लें, और देखिये वे जो फल और मेवे रखे हैं ना! उसमें जो जी चाहे और जितना चाहे ले लें और खायें, और कुदाल लिये हुए उस शहतूत के नीचे जायें। वहां सवा गज लम्बी, सवा गज चौड़ी, सवा गज गहरी जगह खोदें, उसमें से जो निकले लेकर आ जायें। इतनी देर में मैं फुर्सत पा जाऊँगा, फिर आपको हकीम साहब तक पहुँचा दूँगा।''

अमानतुल्लाह ने यह सुनते ही कुदाल उठा ली और बोला, ''बागवान साहब! समतापुर में पेट भरके सत्तू, खा पी चुका हूँ, इस वक़्त कुछ खाने की इच्छा नहीं, आपके कहने से दो सन्तरे लिये लेता हूँ, बस ये काफी हैं''।

यह कह कर अमानतुल्लाह ने दो सन्तरे ले लिये, उन्हें छीला, खाया, जी खुश हो गया, बागवान गौर से देखता रहा।

अब वह शहतूत के पेड़ के नीचे पहुँचा, देखा तो बड़ी सख़्त ज़मीन है, मगर वह हिम्मत न हारा। सवा गज लम्बी चौड़ी ज़मीन नाप पर खोदने लगा। ज़मीन ऐसी सख़्त थी कि कुदाल उचट उचट जाती थी, लेकिन वह जुटा रहा। बड़ी मेहनत करके उसने ऊपर की तह तोड़ ही ली, नीचे नर्म ज़मीन मिली, फिर क्या था, झट खोद खाद कर अलग किया, अन्दर से लोहे की एक सन्दूकची निकली।''

''और सन्दूकची में क्या निकला?'' सरों बी ने चाचा से पूछा। चाचा मियाँ ने कहा, ''सुने जाओ, सन्दूकची लिये वह बागवान के पास आया, सन्दूकची देख कर बागवान बहुत खुश हुआ। उसने अमानतुल्लाह को मुबारकबाद दी और कहा, ''बस भाई! तुम्हारा एक इम्तहान और बाक़ी है, अल्लाह ने चाहा तो तुम आगे भी पूरे उतरोगे। काम बाग तक कोई व्यक्ति न आ सका, तुम पहले आदमी हो कि यहाँ तक पहुँचे और अपने मतलब में सफल हुए। बस अब यह करो कि यह सन्दूकची लो और यह फलों और मेवों का टोकरा उठा लो। ये सब लिये हुए आगे बढो, सामने नहर मिलेगी, उस पर पुल बना है, पुल पर से होते हुए दाहिनी तरफ़ जाना, मुहल्ला काजी टोला में पहुंच जाओगे, काजी टोला में हकीम साहब का खजान्ची रहता है, उसे ये सन्दूकची और फल आदि देना और फिर जैसा वह कहे वैसा करना, अल्लाह ने चाहा तो तुम मग़रिब से पहले हकीम साहब की ख़िदमत में पहुँच जाओगे।''

प्रमाणपत्रः—

बागवान की ये हिदायतें सुनकर अमानतुल्लाह ने सन्दूकची और फलों का टोकरा उठा लिया और नहर की ओर चल दिया। वह काजी टोला पहुँचा, खजान्ची सहाब का मकान पूछता हुआ उनके घर गया। जाकर उनसे मिला। उस वक़्त खजान्ची साहब बैठे नोट गिन रहे थे। अमानतुल्लाह ने जाकर सलाम किया और सन्दूकची और फल देकर कहा, ''मुझे हकीम साहब से मिलना है, आशा है कि आप मेरी मदद करेंगे।''

खजान्ची साहब नाक पर से चश्मा उतारते हुए बोले, ''मियाँ दो मिनट यहाँ ठहर जाओ, मैं जरा एक काम को हो आऊँ, फिर आपके साथ हकीम साहब के पास चलता हूँ।'' और यह कह कर खजान्ची साहब हज़ारों लाखों रुपये के नोट उसी जगह छोड़कर चले गये। अमानतुल्लाह ने इतने ढेरों नोट देखे तो शैतान ने बहकाया, ''अरे मियाँ अमानत! कहाँ हकीम साहब के चक्कर में पड़े हो, लो ये नोट समेटो और अपना रास्ता नापो, उम्र भर चैन से खाओगे, कारखाने वारखाने को गोली मारो।''

''अर्थात् चोरी करने को जी चाहा'' सहू मियाँ ने सवाल किया। चाचा मियाँ ने कहा, ''जी हाँ इस तरह शैतान ने बहकाया तो अमानतुल्लाह ''तौबा तौबा'' कर ही रहा था कि खजान्ची साहब आ गये, पूछा, ''अरे मियाँ तौबा तौबा क्या कर रहे हो?'' अमानतुल्लाह ने साफ साफ कह दिया, ''इन नोटों को देख कर मेरा दिल बेईमानी सिखाने लगा था इसी लिये तौबा तौबा करने लगा। आप जानते हैं कि चोरी करना कितना बड़ा गुनाह है, अल्लाह चोर से बहुत नाराज होता है।''

अमानतुल्लाह की इस बात से खजान्ची साहब बहुत खुश हुए, बोले, ''देखो अस्र का वक़्त हो गया है, चलो मस्जिद चलें, नमाज पढ़ें।''

नमाज पढ़कर अमानतुल्लाह खजान्ची साहब के साथ हकीम साहब से मिलने चला, थोड़ी देर में दोनों हकीम साहब के मकान पर पहुंच गये। खजान्ची साहब ने अमानतुल्लाह को हकीम साहब से मिलाया। अमानतुल्लाह ने हकीम साहब को अदब से सलाम किया, फिर मुसाफहा करके सन्दूकची और फल पेश किये। यह तोहफा पाकर हकीम साहब बहुत खुश हुए। अमानतुल्लाह को गले से लगा लिया और फरमाया, ''तुम जिस वक़्त से मेहनतपुर में दाखिल हुए हो, तुम्हारी सारी बातों की ख़बर मेरे आदमी मुझे देते रहे। ऐ भाग्यशाली लड़के। तुम यहाँ आकार हमारी परीक्षा में पूरे उतरे हो, लो, जो तुम चाहते हो, तुमने मुझसे मिलने से पहले ही प्राप्त कर लिया। इस सन्दूकची में तुम्हारे लिये प्रमाणपत्र मौजूद हैं।

यह कह कर हकीम सहाब ने सन्दूकची की कुंजी अपनी जेब से निकाली, सन्दूकची का ताला खोला, उसका ढकना उठाया, फिर उसके अन्दर से बहुत ही सुन्दर कागज का एक टुकड़ा निकाला, यह कागज बिल्कुल ऐसा था जैसे स्कूलों में प्रमाणपत्र दिया जाता है, यह प्रमाणपत्र अमानतुल्लाह को दिया और कहा पढ़ो, इसमें क्या लिखा है?''

अमानतुल्लाह ने पढ़ा, उसमें लिखा थाः—

''अल्लाह पर भरोसा करो, अल्लाह से डरो और लगातार मेहनत करो, यही तीन बातें इन्सान को हर जगह सफल बनाती हैं।''

हकीम साहब ने अपने हाथ से लिख दिया कि यह प्रमाणपत्र अमानतुल्लाह मियाँ के लिये है, और फिर अपने हस्ताक्षर कर दिये। यह प्रमाणपत्र पाकर अमानतुल्लाह मियाँ बहुत खुश हुए, उन्होंने दिल ही दिल में अल्लाह का शुक्र अदा किया। इसके बाद तीन दिन हकीम साहब के मेहमान रहे। चौथे दिन हकीम साहब ने उन्हें विदा

करते समय पूछा, ''अमानतुल्लाह मियाँ तुम कुछ और चाहते हो तो कहो, अगर हमारे बस में होगा तो तुम्हारा कहना नहीं टालेंगे।''

अमानतुल्लाह मियाँ ने कहा, ''हकीम साहब मैं चाहता हूँ कि आप उन लड़कों की गलतियाँ क्षमा कर दें जो यहाँ मुर्ग़ा बना दिये गये हैं, उन्हें काफी सजा मिल चुकी है, आशा है कि वे अब नेक बन जायेंगे।''

अमानतुल्लाह के कहने से हकीम साहब ने वे सब मुर्ग़े मंगवाये, उनकी तरफ देखा और फिर पुकार कर बोले, ''सबकी गालतियाँ क्षमा, अपने अपने कान छोड़ दो और सीधे खड़े हो जाओ।'' हकीम साहब के यह कहते ही मुर्ग़े बने लड़कों ने अपने अपने कान छोड़ दिये और सीधे खड़े हो गये। हकीम साहब ने सबको नसीहत की और अमानतुल्लाह मियाँ की तरह रहने की ताकीद फरमाई। सब लड़कों ने सच्चे दिल से तौबा की और कहा, ''अब हम कभी बेईमानी न करेंगे, हर काम मेहनत से करेंगे और अल्लाह मियाँ से डरेंगे।''

लड़कों से यह सुना तो अमानतुल्लाह मियाँ ने हकीम साहब से कहा, ''जनाब! ये लड़के सच्चे दिल से तौबा कर रहे हैं, मैं.....

❖❖❖

पृष्ठ .....36... का शेष

हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि0) ईमान लाने के पहले नबी करीम (सल्ल0) और मुसलमानों के सख़्त दुश्मन थे। नजाशी के दरबार में आप ही मुसलमानों को तकलीफ़ पहुँचाने गए थे। आप सख़्त जंगजू और इंन्तिहाई जहीन थे। हज़रत उमर (रज़ि0) के ज़माने में आप (रज़ि0) ही ने मिस्र फ़तेह किया था। हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि0) कहते हैं कि ईमान लाने के बाद मैंने कभी नज़र भरकर हुजूर (सल्ल0) के चेहरे अनवर को नहीं देखा। नबी करीम (सल्ल0) के दरबार में अदब से हमेशा सर झुकाए रखता।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह0) की हदीस की किताब कुरआन शरीफ के बाद सबसे ज़्यादा मोअतबर मानी जाती है। हज़रत इमाम बुखारी (रह0) और हज़ारों अल्लाह वालों ने मदीना शरीफ की मुकद्दस ज़मीन पर ऐहतराम की वजह से न कभी जूते पहने और न कभी सवारी पर सवार हुए।

तुर्की के हुक्मराह जिनसे यूरोप और ऐशिया के ममालिक काँपते थे, जब मस्जिदे नबवी बनाने का इरादा किया, तो पूरी सलतनत से माहिर कारीगरों को चुना गया, जिसमें लगभग 500 कारीगर और मज़दूर थे, यह काम 13 साल ज़ारी रहा, जिसमें वजू और तिलावत अनिवार्य थी। फिर इन माहिर कारीगरों ने दिली एहतराम के साथ दुरूद व सलाम और कुरआनी आयात का विर्द करते हुए मस्जिदें नबवी की इमारत को तअ़मीर किया। पत्थर तराशने का काम शहर से बाहर करते और जब कभी किसी पत्थर को मजीद तराशने की नौबत आती तो फिर उसे मदीना मुनव्वरा से 12 मील दूर ले जाकर तराशा जाता कि नबी करीम (सल्ल0) को आवाज़ से तकलीफ़ न हो।

मस्जिदें नबवी (सल्ल0) एअर कंडीशन्ड है। मगर आज भी इसकी एअर कंडीशनींग मशीन मस्जिद में नहीं हैं बल्कि मस्जिदे नबवी (सल्ल0) से 7 किलो मीटर दूर हैं और वह मशीनें इतनी दूर से मस्जिद को पाईपलाईन के जरिए ठंडा करती हैं।

नबी करीम (सल्ल०) के रोजे मुबारक पर जब हाजिरी दें, तो इंन्तिहाई अदब से हाजिरी दें। किसी तरह की बातचीत से परहेज़ करें और दूसरों का ख़्याल अपने आप से ज़्यादा रखें। क्योंकि सारे हाजी नबी करीम (सल्ल0) के मेहमान हैं।

❖❖❖

घुटने बदलवाने की ज़रूरत कब आती है

लोकेश के भारती

हमारे घुटने शरीर के ऐसे जोड़ हैं, जिन पर पूरे शरीर का वज़न पड़ता है। इसलिए इनके कमज़ोर होने से हमारी चाल ख़राब होने लगती है। जब इनमें तेज़ दर्द होता है तो लोगों का बेडरूम से बाथरूम तक जाना मुश्किल हो जाता है। कई बार नौबत घुटने बदलने तक की आ जाती है। हालांकि, कई बार लाइफस्टाइल बदलने से फर्क पड़ जाता है। आख़िर ये जोड़ क्यों कमजोर होते हैं?कब इन्हें बदलवाना ज़रूरी है और कब नहीं?आइये जानने की कोशिश करते हैंः–

घुटने खराब होने की वजहेंः–

हमारे घुटने खराब होने की कई वजहें हैं। इनमें सबसे बड़ी और पहली वजह है वॉक और एक्सरसाइज न करना और दूसरा है हमारा ओवरवेट होना।

वॉक और एक्सरसाइज न करनाः–

अगर घुटने में दर्द न हो या डॉक्टर ने मना न किया हो तो हर दिन 45 मिनट से 1 घण्टा ब्रिस्क वाक या साइक्लिंग या फिर दोनों करनी चाहिए साथ ही मसल्स की मज़बूती के लिए 30 मिनट स्ट्रेंथनिंग एक्सरसाइज भी करनी चाहिए। दरअसल, वॉक से कार्टिलेज को न्यूट्रिशन मिलता है और मजबूत मांसपेशी एक तरह से कार्टिलेज से पहले झटके, शाक आदि को झेल लेती है। अगर वॉक में परेशानी हो तो लेट कर ही साइक्लिंग एक्सरसाइज करें।

ओवरवेट होनाः–

अगर वजन ज़्यादा है तो इसे काबू करने के उपाय जरूर करें। ज़्यादा वजन में जहां शुगर, का खतरा रहता है, वहीं घुटने खराब होने की आशंका बहुत बढ़ जाती है। इससे घुटनों पर लगातार दबाव रहता है। घुटने के प्टेला बोन पर भी दबाव रहता है।

डाइट–लाइफस्टाइल संतुलित न होनाः–

हमारी डाइट बैलेंस्ड होनी चाहि। उसमें प्रोटीन, कार्ब्स फैट, फाइबर्स, मिनरल्स और विटामिन्स सभी कुछ होना चाहिए। इनके अलावा ज़रूरत पड़ने पर सप्लिमेंट भी लेना चाहिए– विटामिन–D, विटामिन– B12 कैल्शियम आदि।

सप्लिमेंट न लेनाः–

पहले तो इसकी ज़रूरत नहीं होती थी, लेकिन अब लाइफस्टाइल बदलने, बीमारियों के आने, फिजिकल एक्टिविटी और धूप की कमी से सप्लिमेंट की ज़रूरत पड़ रही है। इन्हें न लेने से चीज़ें जल्दी ख़राब हो रही हैं। मसलनः विटामिन–D, विटामिन– B12 कई बार कैल्शियम आदि भी लेना जरूरी हो जाता है।

ग़लत तरीक़े से बैठने सेः–

हममें से बहुत से लोग कहते है कि कुर्सी पर कमर सीधी करके यानी 90 डिग्री के कोण पर बैठना सही रहता है। यह पूरा सच नहीं है। जब हम कमर को 10 डिग्री पीछे की ओर झुकाकर यानी हल्का पीछे की ओर करके बैठते हैं तो यह हमारी रीढ़ की हड्डी के लिए काफी आरामदायक होता है। यह ध्यान रहे सिर्फ 10 डिग्री ही झुकना है। मकसद है पीछे की मांसपेशियों को कुछ सहारा मिल सके। साथ ही बैठने के बाद कई लोग क्रॉस लेग पोजिशन कर लेते हैं यानी एक पैर पर दूसरा चढ़ा कर रखते हैं। इससे भी कार्टिलेज पर दबाव पड़ता है। साथ ही घुटनों को बहुत ज़्यादा मोड़कर लंबे समय तक न रखें। कुर्सी की ऊँचाई ऐसी हो कि पैर ज़मीन पर सीधे टिके रहें। बार–बार उठते–बैठते समय सहारा लें। इनके अलावा एक ही पोजिशन में लगातार 30 मिनट से ज़्यादा रहने से भी असर पड़ता है। और धीरे–धीरे नुकसान होता है। इसलिए सावधान रहें और स्वस्थ रहें। ◆◇◆

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

दृष्टिहीन जैनब ने भी कायम की मिसालः–

जम्मू–कश्मीर के श्रीनगर की दृष्टिहीन छात्रा जैनब बिलाल ने भी *CBSE* 10वीं में 95% नंबर लाकर मिसाल क़ायम की है। जैनब बिना राइटर के लैपटॉप का इस्तेमाल कर *CBSE* परीक्षा देने वाली पहली दृष्टिहीन स्टूडेंट्स में से एक बन गई। उनका इरादा कंप्यूटर ऐप्लिकेशन में बैचलर करने का है।

गरीबी बढ़ने का खतराः रिपोर्टः–

पश्चिम एशिया संघर्ष से भारत में 25 लाख लोगों के गरीबी की चपेट में आने का खतरा है। साथ ही देश के मानव विकास की प्रगति में कुछ कमी भी आ सकती है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में यह बात कही गई।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम *(UNDP)* ने ''पश्चिम एशिया में सैन्य वृद्धिः एशिया और प्रशांत क्षेत्र में मानव विकास पर प्रभाव'' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा है कि वैश्विक स्तर पर 88 लाख लोग गरीबी के जोखिम में आ सकते हैं।

चाँद का चक्कर लगा लौट आयेः–

नासा के आर्टेमिस ॥ मिशन के चार अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा की दहलीज छूकर शनिवार सुबह धरती पर लौटे। इस सफलता ने 2028 में होने वाली मानव लैंडिंग का रास्ता साफ़ कर दिया। यह मिशन 2 अप्रैल को लाँच हुआ था कई चुनौतियों के बावजूद 10 दिन का यह मिशन सफलतापूर्वक पूरा हुआ। नासा का लक्ष्य चांद पर फिर से जाना ही नहीं, बल्कि वहां इंसानों के रहने के लिए परमानेंट बेस बनाना भी है। ओरियन कैप्सूल अमेरिका के सैन डिएगो के तट के पास प्रशांत महासागर में स्प्लैशडाउन हुआ। नासा के अधिकारी ने कहा कि ये मानवता की ओर से सितारों तक भेजे गए हमारे दूत थे और मैं इससे बेहतर दल की कल्पना नहीं कर सकता था।

1972 के बाद यह पहली बार है, जब इंसान चंद्रमा के इतने करीब पहुंचा है।

अगला मिशन आर्टेमिस ॥। अगले साल होगा। इसमें अंतरिक्ष यात्री पृथ्वी की कक्षा में अपने कैप्सूल को लूनर लैंडर से जोड़ने का अभ्यास करेंगे।

2028 में चांद पर दो अंतरिक्ष यात्री उतारने की योजना है।

ट्रंप को झटका, 16 साल बाद हंगरी में ऑर्बान हारेः–

हंगरी के आम चुनाव में विपक्षी नेता पीटर मैग्यार (*Peter Magyar*) ने विक्टर ऑर्बान (*Viktor Orban*) को हराकर बड़ी जीत हासिल की है। हंगरी में पीटर मैग्यार की जीत को अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के लिए झटका माना जा रहा है।

दरअसल, हंगरी के प्रधानमंत्री रहे विक्टर ट्रंप के करीबी सहयोगी रहे हैं और उनकी राष्ट्रवादी राजनीति, सख्त नीतियां ट्रंप की राजनीति से मेल खाती हैं। इस चुनाव में ट्रंप ने अपना पूरा दमखम विक्टर की जीत के लिए लगाया था।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۔ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांकः **22/04/2026**　　　　　　تاریخ ________

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT — NADWATUL ULAMA

ATIYA — NADWATUL ULAMA

BUILDING — NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।
नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 25 - Issue 03

Whatsapp & Call 9559844716
Office Timing : 08:00 AM To 1:00PM
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3